khabardrishtikon@gmail.com https://khabardrishtikon.com/ https://l.facebook.com khabardrishtikon.com

KD NEWS सच का सामना

लखनऊ

मंगलवार – 08 अगस्त 2023

वर्ष : 02 – अंक : 289

पृष्ठ–8 मूल्य – 1: 00 रूपये

आरएनआई : UPHIN/2021/82210

हिन्दी दैनिक

खबर

समाचार ही नहीं, विश्वास भी...

दृष्टिकोण

2 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र माल से सघन मिशन इन्द्रधनुष ....

3 जीआरपी चारबाग ने कंट्रोल रूम की सूचना पर चंद घंटो ...

5 रेलवे ट्रैक पर अचेत अवस्था में मिली बालिका, दुष्कर्म...

संक्षिप्त

बिपाशा की बेटी के दिल में थे दो छेद

बिपाशा बसु ने हाल ही में बताया कि उनकी बेटी देवी के जन्म के समय उनके दिल में दो छेद थे। बिपाशा ने नेहा धूपिया के साथ लाइव चैट के दौरान ये जानकारी दी। उन्होंने ये भी बताया कि उनकी बेटी के जन्म के तीन महीने बाद ही बेटी की ओपन हार्ट सर्जरी करानी पड़ी। बिपाशा बसु और करण सिंह ग्रोवर की बेटी का जन्म 12 नवंबर 2022 को हुआ। बिपाशा और करण सिंह ग्रोवर ने बेटी का नाम अनाउंस करने के लिए एक खास पोस्ट शेयर की थी। बिपाशा ने बताया कि उनकी बेटी जब पैदा हुई तो उन्हें ये नहीं मालूम था कि उसे वेंट्रिकुलर सेप्टल डिफेक्ट था। देवी के जन्म के समय उसके दिल में दो जगह छेद थे। बिपाशा ने अपनी मां बनने की जर्नी के बारे में कहा- हमारे मां-बाप बनने का सफर किसी नॉर्मल पेरेंट से बहुत अलग है। आज मेरे चेहरे पर जो मुस्कान है वो काफी मुश्किलों के बाद आई है। मैं नहीं चाहती कि कभी भी किसी और मां को ऐसी चीज से गुजरना पड़े। आप ये सोचकर देखिए कि आप अभी-अभी मां बनी हैं और आपको पता चल रहा हो कि आपके बच्चे की सर्जरी करनी पड़ेगी, तो आपको कैसा महसूस होगा। बिपाशा ने आगे कहा- मुझे देवी के जन्म के तीन दिन बाद पता चला कि उसके दिल में छेद है। मैंने कभी नहीं सोचा था

चंद्रयान-3 से ली गई चंद्रमा की तस्वीरें

इसरो ने जारी किया वीडियो, चांद के और करीब पहुंचा मिशन

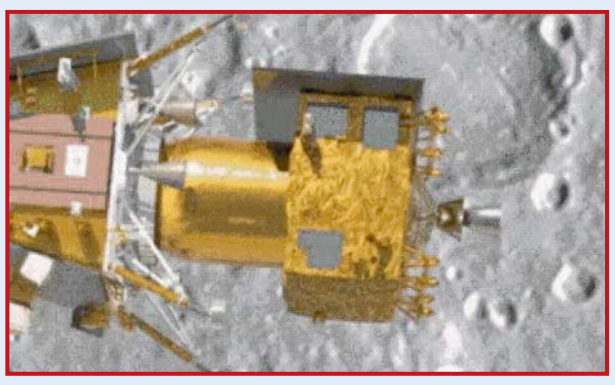

नई दिल्ली। चंद्रयान-3 के चंद्रमा की कक्षा में प्रवेश करने के एक दिन बाद रविवार को इसरो ने एक वीडियो जारी किया। इस वीडियो में 'चंद्रयान-3' से ली गईं चंद्रमा की तस्वीरें दिखाई गईं हैं। अंतरिक्ष एजेंसी ने वीडियो के साथ लिखा कि 'चंद्रयान -3' मिशन से चंद्रमा का दृश्य, जब पांच अगस्त को उसे चंद्रमा की कक्षा में स्थापित किया जा रहा था। वीडियो के जरिए जारी तस्वीरों में चंद्रमा को नीले हरे रंगों में दिखाया गया है। चांद पर कई गड्ढे भी नजर आ रहे हैं। वीडियो रविवार देर रात होने वाले दूसरे बड़े मनूवर (ISRO) से कुछ घंटे पहले जारी किया गया। इस बीच, रविवार को भारतीय समयानुसार लगभग रात 11 बजे चंद्रयान-3 की कक्षा को घटाया गया। अंतरिक्षयान सफलतापूर्वक एक योजनाबद्ध कक्षा कटौती प्रक्रिया से गुजरा। इंजनों की रेट्रोफायरिंग ने इसे चंद्रमा की सतह के और करीब ला दिया है। चंद्रयान चांद की सतह से फिलहाल 170 किमी ७ 4313 किमी की दूरी पर है। इससे पहले चंद्रमा की तरफ तेजी से बढ़ते चंद्रयान-3 ने शुक्रवार यानी चार जुलाई को धरती से चांद के बीच करीब दो-तिहाई से अधिक दूरी तय कर चुका था। इसके एक दिन बाद यानी पांच अगस्त को इसने चंद्रमा की कक्षा में प्रवेश कर लिया। चंद्रयान-3 को श्रीहरिकोटा के सतीश धवन स्पेस सेंटर से 14 जुलाई को लॉन्च किया गया था। चंद्रयान-3 को नौ अगस्त को दोपहर दो बजे के आसपास चंद्रमा की तीसरी कक्षा में प्रविष्ट कराया जाएगा। इसके बाद 14 अगस्त और 16 अगस्त को इसे क्रमशः चौथी और पांचवीं कक्षा में पहुंचाने की कोशिश की जाएगी। 15 जुलाई को चंद्रयान-3 ने सफलतापूर्वक पृथ्वी की पहली कक्षा में प्रवेश किया था। इसके बाद चंद्रयान ने 17 जुलाई को पृथ्वी की दूसरी और 18 जुलाई को पृथ्वी की तीसरी कक्षा में सफलतापूर्वक प्रवेश किया। इसके बाद 20 जुलाई को चंद्रयान ने पृथ्वी की चौथी और 25 जुलाई को पृथ्वी की पांचवीं कक्षा में सफलतापूर्वक प्रवेश किया था। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (क्रफ्ड) ने एक अगस्त को भारत के बहुप्रतीक्षित अभियान चंद्रयान-3 अंतरिक्षयान को पृथ्वी की कक्षा से निकालकर सफलतापूर्वक चांद की कक्षा की तरफ रवाना किया था। पांच अगस्त को चंद्रयान सफलतापूर्वक चंद्रमा की कक्षा में स्थापित हो गया था। मिशन ने 14 जुलाई को दोपहर 2:35 बजे श्रीहरिकोटा केन्द्र से उड़ान भरी और अगर सब कुछ योजना के अनुसार होता है तो यह 23 या 24 अगस्त को चंद्रमा पर उतरेगा। मिशन को चंद्रमा के उस हिस्से तक भेजा जा रहा है, जिसे डार्क साइड ऑफ मून कहते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि यह हिस्सा पृथ्वी के सामने नहीं आता। फिलहाल मिशन चंद्रमा की अपनी यात्रा पर है, जो बेहद खास है। इससे पहले चंद्रयान-3 को इसरो के 'बाहुबली' रॉकेट एलवीएम3 से भेजा गया। दरअसल, पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से बाहर निकलने के लिए बूस्टर या कहें शक्तिशाली रॉकेट यान के साथ उड़ते हैं। अगर आप सीधे चांद पर जाना चाहते हैं, तो आपको बड़े और शक्तिशाली रॉकेट की जरूरत होगी। इसमें ईंधन की भी अधिक आवश्यकता होती है, जिसका सीधा असर प्रोजेक्ट के बजट पर पड़ता है। यानी अगर हम चंद्रमा की दूरी सीधे पृथ्वी से तय करेंगे तो हमें ज्यादा खर्च करना पड़ेगा। नासा भी ऐसा ही करता है लेकिन इसरो का चंद्र मिशन सस्ता है क्योंकि वह चंद्रयान को सीधे चंद्रमा पर नहीं भेज रहा है।

दिल्ली एम्स में लगी भीषण आग, अफरा तफरी मची

नई दिल्ली। दिल्ली एम्स में आग लगने की खबर है। दमकल विभाग की गाड़ियां मौके पर पहुंच गई हैं। आग पर काबू पाने का काम किया जा रहा है। आग लगने से पूरे इलाके में अफरातफरी का माहौल बन गया है। जानकारी के मुताबिक, इमरजेंसी वार्ड में आग लगी है। अभी तक किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। अभी आग लगने के कारण का पता नहीं चल पाया है। दमकल विभाग के मुताबिक, एम्स अस्पताल में आग लगने की सूचना मिलने के तुरंत बाद ही मौके पर छह गाड़ियों को भेजा गया है। आग करीब 12 बजे लगी है। मौके पर दमकल विभाग और स्थानीय पुलिस बल मौजूद हैं। लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया जा रहा है। एम्स में लगी आग पर जानकारी देते हुए अस्पताल ने कहा कि इस घटना में किसी भी जानमाल का नुकसान नहीं हुई है। स्वास्थ्य सेवाओं को दोबारा से सामान्य रूप से जल्द ही चलाया जाएगा।

शाहपुरा में नए जिले के सीमांकन का विरोध

पुलिस ने किया लाठीचार्ज, 12 घायल, राजस्थान में अब 10 संभाग और 50 जिले

जयपुर। राजस्थान में 19 नए जिले और तीन संभाग नोटिफिकेशन के साथ ही अस्तित्व में आ गए। अब प्रदेश में 50 जिले और 10 संभाग हो गए हैं। लेकिन, इसे लेकर विवाद भी शुरू हो गए हैं। भीलवाड़ा से अलग करके बनाए गए शाहपुरा जिले के उद्घाटन कार्यक्रम में लोगों ने सीमांकन का जमकर विरोध किया। हालात बेकाबू होते देख पुलिस ने लाठीचार्ज कर दिया। इसमें 12 लोग घायल हो गए। लोग जिले से माइंस वाले इलाके हटाने से नाराज हैं। शाहपुरा में गवर्नमेंट कॉलेज में आयोजित जिला स्थापना कार्यक्रम में प्रदर्शनकारियों ने हुरडा और गुलाबपुरा क्षेत्र को जिले के प्रस्तावित नक्शे से हटा कर भीलवाड़ा में शामिल करने का विरोध किया। दरअसल, कार्यक्रम से पहले शाहपुरा संघर्ष समिति और शहर के दर्जनों संगठन कार्यक्रम स्थल के बाहर पहुंच गए। उन्होंने कॉलेज के बाहर शांतिपूर्ण तरीके से प्रदर्शन शुरू कर दिया। सुबह करीब 11:15 बजे मंत्री महेश जोशी कार्यक्रम में पहुंचे, जिन्हें प्रदर्शनकारियों ने काले झंडे दिखाए। करीब 12 बजे प्रदर्शन तेज हो गया। प्रदर्शनकारियों में से सैकड़ों लोग कॉलेज की दीवार फांद कर कार्यक्रम स्थल पर पहुंचने की कोशिश करने लगे। वहां मौजूद पुलिस के जवानों ने उन्हें रोकने की कोशिश की। हालात बेकाबू होते देख आरएसी की टीम ने लाठीचार्ज कर दिया। इससे प्रदर्शनकारी उग्र हो गए और पत्थरबाजी करने लगे। इस दौरान घायल हुए 12 से ज्यादा

मणिपुर हिंसा पर अखिलेश ने सीएम योगी को घेरा

बोलेः बयान देकर देश की आवाज बनें, हम समर्थन करेंगे

लखनऊ। यूपी में सोमवार से विधानमंडल का मानसून सत्र शुरू हो गया। सत्र के पहले दिन कार्यवाही हंगामे के साथ शुरू हुई। सपा नेताओं ने मणिपुर हिंसा को लेकर यूपी विधानसभा में निंदा प्रस्ताव लाने की मांग की। इसे लेकर सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि आज मणिपुर में महिलाओं के साथ हुई जघन्य घटना पर पूरी दुनिया में निंदा हो रही है। हम आप अमेरिका-यूरोप निवेश लाने के लिए गए। वहां पर इसकी चर्चा हो रही है। अब इसकी चर्चा यूपी विधानसभा में भी करवाई जाए। उन्होंने मांग की कि मणिपुर हिंसा पर यूपी विधानसभा में निंदा प्रस्ताव लाया जाए और नेता सदन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को बयान देना चाहिए। अखिलेश यादव ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर तंज सकते हुए कहा कि वो भाजपा के मुख्यमंत्री हैं। मैं उनकी मजबूरी समझ सकता हूं। मणिपुर हिंसा पर बोलकर वो देश की आवाज बन जाएं। हम भी उनका समर्थन करेंगे। इस पर सदन में हंगामा होने लगा। विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने स्थिति को संभालते हुए कहा कि हम दूसरे राज्यों की यहां पर चर्चा नहीं कर सकते। नहीं तो कल कोई कहेगा कि बंगाल में हिंसा की या केरल की किसी घटना पर चर्चा हो। उन्होंने सदन के सभी सदस्यों से अपने क्षेत्रों से जुड़े सवालों को उठाने की अपील की। यूपी विधानमंडल सत्र की कार्यवाही शुरू होने से पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मीडिया से बातचीत में कहा कि प्रदेश के समग्र विकास एवं जनसमस्याओं के समाधान के लिए हम विधानमंडल की कार्रवाई में स्वस्थ चर्चा के लिए तैयार हैं। इसके लिए सर्वदलीय नेताओं की बैठक में सरकार की ओर से सार्थक चर्चा के लिए आवाह्न किया गया। साथ ही सरकार सभी दलों के सदस्यों के उनके सवालों के जवाब देने के लिए पूरी तरह से तैयार है। उन्होंने कहा कि सदन आम जनमानस से जुड़ी समस्याओं को रखने एवं इस ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करने का महत्वपूर्ण मंच है। ऐसे में सदन में एक स्वस्थ चर्चा के लिए सरकार पूरी तरह से तैयार है। ऐसे में सदन को सार्थक चर्चा का विषय बनाना चाहिये। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में प्रदेश ने पिछले 6 वर्षों में विकास की नई ऊंचाइयों को छुआ है। इन 6 वर्षों के दौरान प्रदेश के परसेप्शन को बदलकर नौजवानों, नागरिकों के सामने कुत्सित राजनीति के कारणों से जो उनके सामने पहचान का संकट खड़ा हो गया था, उस पहचान के संकट से मुक्त करते हुए प्रदेश को देश के एक प्रमुख राज्य के रूप में स्थापित करने में पूरी सफलता प्राप्त हुई है। एक तरफ जहां इसे आगे बढ़ाने में सफलता प्राप्त हुई है, वहीं प्रदेश की अर्थव्यवस्था को दोगुना करने के साथ प्रति व्यक्ति आय को भी दोगुना करने में सफलता प्राप्त हुई है।

राज्यसभा में दिल्ली सर्विस बिल पेश

नई दिल्ली। राज्यसभा में केंद्र सरकार की तरफ से केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने दिल्ली सर्विस बिल पेश किया। इस पर आप सांसद राघव चड्ढा ने कहा- ये बिल एक राजनीतिक धोखा है। भाजपा ने 1989, 1999 और 2013 के लोकसभा चुनाव के घोषणा-पत्र में दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा देने का वादा किया था। आज भाजपा के पास मौका है, दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा दीजिए। राघव बोले- गृहमंत्री अमित शाह कह रहे थे कि पं. नेहरू दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा देने के पक्ष में नहीं थे। मैं उन्हें बता दूं कि लाल कृष्ण आडवाणी संसद दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा देने के लिए बिल लेकर आए थे। अटल जी, आडवाणी जी, सुषमा स्वराज और मदन लाल खुराना ने दिल्ली को पूर्ण राज्य बनाने के लिए संघर्ष किया था। आप ये बिल लाकर उनके संघर्ष का अपमान कर रहे हो। आपके पास मौका है- नेहरूवादी नहीं अटल-आडवाणीवादी बनिए। इसके पहले कांग्रेस सांसद अभिषेक मनु सिंघवी ने बिल पर चर्चा की शुरूआत की। उन्होंने कहा- ये बिल संघीय ढांचे के खिलाफ है। इसके बाद मुख्यमंत्री दो सचिवों के नीचे आएगा यानी सचिव फैसला करेगा और मुख्यमंत्री देखेगा। सभी बोर्डों, कमेटियों के प्रमुख सुपर उट यानी गृह मंत्रालय से ही बनाए जाएंगे। सिंघवी ने कहा कि बिल का मकसद डर पैदा करना है। जो लोग इसका समर्थन कर रहे हैं या समर्थन करने की घोषणा कर चुके हैं, उन्हें यह सोचना चाहिए कि सबका नंबर आ सकता है।

बीजेपी सांसद रामशंकर कठेरिया को जिला न्यायालय ने दी राहत

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के आगरा में टोरेंट अधिकारी से मारपीट एवं बलवा करने के मामले में भाजपा सांसद रामशंकर कठेरिया दोषी पाए गए। कोर्ट ने उन्हें दो वर्ष कारवास की सजा सुनाई थी। इस मामले में भाजपा सांसद ने जिला जज आगरा के न्यायालय में अपील की, जहां से उन्हें राहत मिल गई है। दो साल की सजा का आदेश अगली सुनवाई तक निर्लंबित कर दिया गया है। अगली सुनवाई की तारीख 11 सितंबर दी गई है। ये खबर मिलते ही उनके समर्थकों में खुशी की लहर दौड़ गई। उनके आवास पर समर्थकों ने मिष्ठान वितरण कर खुशी जताई। मामला हरीपर्वत थाना क्षेत्र के साकेत माल का है। यहां स्थित टोरेंट के सतर्कता कार्यालय (विद्युत चोरी निवारण कार्यालय) पर 16 नवंबर 2011 को पूर्व एससी-एसटी आयोग के अध्यक्ष एवं वर्तमान में इटावा से भाजपा सांसद राम शंकर कठेरिया पहुंचे। उनके साथ करीब 10-15 समर्थक थे। यहां पर मैनेजर भावेश रसिकलाल शाह बिजली चोरी से सम्बंधित मामलों की सुनवाई एवं निस्तारण कर रहे थे। इसी दौरान सांसद रामशंकर कठेरिया के साथ आए समर्थकों नें भावेश रसिकलाल शाह के कार्यालय में घुसकर उनके साथ मारपीट शुरू कर दी।

बुनकरों को प्रोत्साहित करने पहुंचे पीएम मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सोमवार को नई दिल्ली में प्रगति मैदान के भारत मंडपम में राष्ट्रीय हथकरघा दिवस समारोह में भाग लेने के लिए पहुंचे। इस दौरान उन्होंने कहा कि पिछले 9 वर्षों में खादी के उत्पादन में तीन गुना से अधिक की वृद्धि हुई है और खादी के कपड़ों की बिक्री भी पांच गुना बढ़ गई है। उन्होंने कहा कि देश-विदेश में खादी के कपड़ों की मांग बढ़ रही है। विपक्षी दलों के गठबंधन I.N.D.I.A पर परोक्ष रूप से निशाना साधते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि देश अब एक स्वर में भ्रष्टाचार, वंशवाद की राजनीति और तुष्टिकरण जैसी बुराइयों से कह रहा है भारत छोड़ो। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद वस्त्र उद्योग (खादी) को मजबूत करने पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया, जो पिछली सदी में इतना मजबूत था। आलम यह था कि इसे मरने के लिए छोड़ दिया गया। खादी पहनने वाले लोगों को हीन भावना से देखा जाता था। साल 2014 से हमारी सरकार इस स्थिति और सोच को बदलने में जुटी है। पीएम ने कहा कि मैंने लोगों से खादी का कोई न कोई सामान खरीदने का निवेदन किया था। इसका नतीजा जो निकला उसके हम सभी साक्षी हैं। देश में खादी की बढ़ती लोकप्रियता पर कहा कि इसकी बिक्री अब बढ़कर 1.30 लाख करोड़ रुपये हो गई है जो 2014 से पहले करीब 25,000-30,000 करोड़ रुपये थी। उन्होंने कहा कि हमारी कोशिश है कि भारत के हथकरघा, खादी, कपड़ा क्षेत्र को विश्व गुरु बनाया जाए। राष्ट्रीय हथकरघा दिवस समारोह में भारत मंडप में प्रधानमंत्री ने कहा कि स्वदेशी वस्तुओं को लेकर देश में एक नई क्रांति आई है। उन्होंने देशवासियों से आने वाले त्योहारों में स्थानीय उत्पादों को और बढ़ावा देने का आग्रह किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि देश में ह्यनव-मध्यम वर्गह्न का उदय हो रहा है, जो कपड़ा कंपनियों को बड़ा अवसर प्रदान करता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि एक जिला, एक उत्पाद पहल के माध्यम से विभिन्न जिलों में बने अनूठे उत्पादों को बढ़ावा मिल रहा है। गुजरात के स्टैच्यू ऑफ यूनिटी की तरह पूरे देश में एकता मॉल स्थापित किए जा रहे हैं। मोदी ने कपड़ा व फैशन उद्योग से अपना दायरा बढ़ाने और भारत को दुनिया की तीन शीर्ष अर्थव्यवस्थाओं में ले जाने के लिए महत्वपूर्ण रूप से योगदान देने का भी आह्वान किया। बता दें, भारत सरकार साल 2015 से हर साल 7 अगस्त को राष्ट्रीय हथकरघा दिवस मनाती है ताकि बुनकरों और शिल्पकारों को महत्त्व दिया जा सके।

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र माल से सघन मिशन इन्द्रधनुष अभियान का हुआ शुभारंभ

समय पर टीकाकरण से बच्चों का जानलेवा बीमारियों से होता है बचाव: डॉ मनोज अग्रवाल

बच्चे को टीकाकरण से दूर न रखें यह आपके बच्चे की सुरक्षा के लिए : डॉ ए पी मिश्रा

खबर दृष्टिकोण

लखनऊ। ब्लॉक प्रमुख माल के प्रतिनिधि रामकुमार राही ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र माल में बने टीकाकरण बूथ पर फीता काटकर सोमवार को सघन मिशन इंद्रधनुष अभियान का शुभारंभ किया। इस दौरान ब्लॉक प्रमुख के प्रतिनिधि ने कहा कि जिन बच्चों को सभी टीके लग जाते हैं तो वह जानलेवा बीमारियों से सुरक्षित रहते हैं। इसलिए हम सभी का फर्ज बनता है कि सभी बच्चों और गर्भवती को समय रहते टीका लग जाना चाहिए ब्लॉक प्रमुख के प्रतिनिधि ने कहा कि कोई भी काम तभी सफल हो सकता है जिसमें समाज का सहयोग मिलता है। मेरी जनसामान्य से अपील है कि बच्चों और गर्भवती को समय से टीका जरुर लगवा दें। इसके साथ ही जिले के सभी ग्राम प्रधान, समासद, धर्मगुरु, समाज के प्रतिष्ठित नागरिक और अन्य विभाग भी इस अभियान को सफल बनाने के लिए अपना शत प्रतिशत सहयोग करें|मुख्य चिकित्सा अधिकारी लखनऊ डाक्टर मनोज अग्रवाल ने कहा कि यह महत्वाकांक्षी अभियान है | सघन मिशन इंद्रधनुष अभियान नियमित टीकाकरण से किन्हीं कारणों छूटे हुए शून्य से पांच साल तक की आयु के बच्चों और गर्भवती को टीकाकृत करने के लिए आयोजित होता है । इस अभियान को सफल बनाने में सभी लोग अहम भूमिका निभाएं। इस दौरान कोई भी कोताही न बरती जाये। जिला प्रतिरक्षण अधिकारी डा. ए.पी. मिश्रा ने जानकारी दी कि इस अभियान में कुल 27 टीकाकरण इकाइयां अपना योगदान देंगी जिसमें शहरी क्षेत्रों में 16 एवं ग्रामीण क्षेत्रों में 11 हैं जिनके द्वारा कुल 2320 सत्रों के माध्यम से शून्य से पाँच साल तक की आयु के बच्चों और गर्भवती को टीका लगाया जाएगा । जनपद में हेड काउंट सर्वे डेटा में शून्य से पांच साल तक की आयु के कुल 3,49,116 बच्चे हैं 'जिसमें डिप्थीरिया, परट्यूसिस, टिटनेस, हिपेटाइटिस बी एवं इंफ्लूएंजा टाइप बी (पेंटा–1) टीके के इस डोज के छूटे बच्चों की संख्या 6444, पेंटा –2 टीके के ड्यू बच्चों की 3411 एवं पेंटा – 3 टीके के ड्यू बच्चों की संख्या 3291 हैं। इसके साथ ही मीजल्स एवम रुबेला (एमआर) की पहली डोज से छूटे हुए बच्चों को संख्या 4601 और दूसरी डोज से छूटे हुए बच्चों की संख्या 4461 है। इसके अलावा टिटनेस एवं व्यस्क डिप्थीरिया (टीडी) के टीके की ड्यू गर्भवती की संख्या 3592 है । जनपद में 2115 आशा कार्यकर्ता, 592 एएनएम एवं 1134 लिंक वर्कर के माध्यम से यह अभियान चलाया जाएगा। डॉ मिश्रा ने कहा कि अगला अभियान 11 सितंबर और 9 अक्टूबर से चलेगा। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य मातृ एवं शिशु मृत्यु दर को कम करना है। कार्यक्रम में शत प्रतिशत टीकाकरण का लक्ष्य रखा गया है ताकि 12 प्रकार की बीमारियों से बच्चों को बचाया जा सके। इस दौरान डॉक्टर अरुण चौधरी अधीक्षक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, योगेश रघुवंशी जिला स्वास्थ्य शिक्षा एवं सूचना अधिकारी सतीश यादव जिला कार्यक्रम प्रबंधक, राजेश पांडे स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी सीएचसी माल, वंदना सिंह बीपीएम माल, यूएनडीपी के राज्य प्रतिनिधि डॉक्टर अब्बास आगा, डॉ सुरभि त्रिपाठी एसएमओ डब्ल्यूएचओ, डॉ सुजीत सिंह यूनिसेफ, नीरज नागर यूएनडीपी व अन्य लोग मौजूद रहे।

महंगाई के खिलाफ सपा नेता का अनोखा प्रदर्शन

लखनऊ (संवाददाता)। यूपी विधानमंडल का सत्र आज से शुरू हो रहा है। सत्ता पक्ष ने अलग–अलग मुद्दों पर जवाब देने की तो विपक्ष ने सरकार को घेरने की रणनीति बना ली है। सपा ने पहले ही तय कर लिया था कि पार्टी महंगाई और मणिपुर हिंसा के मामले को उठाएगी। सोमवार को सत्र के पहले दिन सपा के विधान परिषद सदस्य आशुतोष सिन्हा टमाटर की माला पहनकर साइकिल से विधानसभा पहुंचे। उन्होंने टमाटर के लगातार बढ़ते दामों को लेकर सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि महंगाई लगातार बढ़ती जा रही है। इससे आम लोगों के लिए अपना घर चलाना मुश्किल हो गया है। इस समय खुदरा बाजार में टमाटर के दाम 200 से प्रति किलो से भी ज्यादा हो गए है। सपा कार्यकर्ता विधानभवन के सामने चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा के पास प्रदर्शन कर रहे हैं। विधानमंडल के मानसून सत्र में पहले दिन प्रश्नकाल के बाद करीब 13 विधेयक सदन के पटल पर रखने की तैयारी है। इसमें विधानसभा की नई नियमावली भी पेश की जाएगी। लेकिन, समाजवादी पार्टी ने मणिपुर की घटना सहित प्रदेश से जुड़े ज्वलंत मुद्दों पर सरकार को घेरने की रणनीति बनाई है। सत्ता पक्ष शायद ही ऐसा स्वीकार करे।

थप्पड़कांड...

नाराज आशाबहुओ ने सीएचसी की ओपीडी में जड़ा ताला,किया प्रर्दशन

एसडीएम व प्रभारी निरीक्षक ने मौके पर पहुंचकर आक्रोशित आशाबहुओ समझा बुझाकर डाक्टर पर कार्यवाही का आश्वासन,तब जाकर ओपीडी का खुला ताला

पीड़ित आशाबहू की तहरीर पर डाक्टर के विरुद्ध मारपीट समेत अन्य धाराओ में दर्ज हुआ मुकदमा

मोहनलालगंज। मोहनलालगंज सीएचसी में अल्ट्रासाउंड के लिये 200रूपये सुविधा शुल्क ना देने पर डाक्टर हवलदार भारती द्वारा आशाबहू सरोजन से अभद्रता व कई थप्पड़ मारने की घटना के चार दिन बीत जाने के बाद भी आरोपी डाक्टर पर कोई कार्यवाही ना किये जाने से नाराज आशाबहुओ ने सोमवार की सुबह आठ बजे मोहनलालगंज सीएचसी केओपीडी भवन के मुख्य गेट में ताला जड़कर प्रदर्शन शुरू कर दिया |इस दौरान डाक्टर,कर्मचारियोंसमेत मरीज बाहर खड़े रहे |आक्रोशित आशाबहुये आरोपी डाक्टर द्वारा आशाबहू सरोजन को थप्पड़ मारने की सीसीटीवी फुटेज में पुष्टि के बाद भी कार्यवाही की बजाय सीएमओ पर बचाने समेत मोहनलालगंज पुलिस पर आरोपी डाक्टर के खिलाफ तहरीर देने के चार दिन बाद भी मुकदमा दर्ज कर कार्यवाही ना करने का आरोप लगाते हुये जमकर हगांमा कांटा |सूचना पाकर उपजिलाधिकारी हनुमान प्रसाद मौर्य ने प्रभारी निरीक्षक संतोष कुमार आर्य समेत पुलिस फोर्स के साथ मौके पर पहुंचकर आक्रोशित आशाबहुओ को समझाने बुझाने के साथ ही आरोपी डाक्टर पर कार्यवाही किये जाध्ने का आश्वासन दिया,तब जाकर आशाबहुओ का आक्रोश शांत हुआ ओर उन्होने ओपीडी के मुख्य गेट पर जड़ा ताला खोलने के साथ ही प्रदर्शन समाप्त किया। जिसके बाद डाक्टरो समेत स्वास्थकर्मियों ने भवन के अंदर जाकर मरीजो का इलाज शुरू किया |ओपीडी भवन में आशाबहुओ द्वारा ताला जड़ने के चलते सुबह 8:00बजे से 10:00बजे तक ओपीडी सेवाये पुरी तरह ठप्प रही |इस दौरान सैकड़ो की संख्या में इलाज कराने आये मरीज वापस लौट गये |इंस्पेक्टर संतोष कुमार आर्य ने बताया सीएचसी अधीक्षक डा०अशोक कुमार से सीसीटीवी फुटेज मिली है,जिसमें डाक्टर द्वारा आशाबहू की पिटाई की पुष्टि के बाद पीड़ित आशाबहू सरोजन द्वारा दी गयी तहरीर पर आरोपी डाक्टर के विरूद्व मारपीट समेत अन्य धाराओ में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी गयी हैं।

समझाने के दौरान एसीएमओ से भिड़ी आशाबहुयें...

सीएचसी की ओपीडी में नाराज आशाबहुओ द्वारा ताला जड़ने की सूचना पाकर एसीएमओ डा०आर एन सिंह व डिप्टी सीएमओ डा०विनय मिश्रा ने मौके पर पहुंचकर नाराज आशाबहुओ को समझाने का प्रयास किया तो उनसे भिड़ गयी ओर विभागीय अफसरो पर आरोपी डाक्टर को बचाने का आरोप लगाकर हगांमा करने,एसीएमओ डा०आर एन सिहं ने आशाबहुओ से कहा डाक्टर पर कार्यवाही के लिये जांच रिपोट कार्यवाही के लिये सीएमओ को दी गयी है,जो शासन को भेजी गयी है,जल्द ही कार्यवाही होगी |नाराज आशाबहुओ ने डाक्टर पर कार्यवाही ना होने पर 10अगस्त के बाद प्रदर्शन की चेतावनी दी।

एमआई विशेष टीकाकरण अभियान का किया बहिष्कार...

डाक्टर पर कार्यवाही ना होने से नाराज आशाबहुओ ने एमआई विशेष टीकाकरण अभियान का बहिष्कार करते हुये गांव–गांव जाकर टीकाकरण करानेसे मना कर दिया,जिसके चलते एमआई टीकाकरण अभियान पूरी तरह ठप्प रहा |सीएचसी अधीक्षक डा०अशोक कुमार ने आशाबहुओसेवार्ताकर टीकाकरण अभियान कराये जाने का अनुरोध किया लेकिन वो डाक्टर पर कार्यवाही के बाद टीकाकरण अभियान मेंशामिल होने पर अड़ी रही।

कृषि में तकनीक का प्रयोग कर आय बढ़ायें किसान-शाही

मिलियन फार्मर्स स्कूल कार्यक्रम में प्रदेशभर के किसानों से वर्चुअल रूबरू हुए कृषि मंत्री

खबर दृष्टिकोण

लखनऊ। कृषि क्षेत्र में नई तकनीकों को अपनाकर प्रदेश के किसान अपनी आय को बढ़ाने तथा प्रदेश की अर्थव्यवस्था को एक ट्रिलियन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। इस क्षेत्र में कृषि विभाग द्वारा चलाई जा रही किसान पाठशाला किसानों को जागरूक करने तथा सरकारी योजनाओं में इनकी सहभागिता बढ़ाने के लिए प्रभावी सिद्ध हो रही है। किसान पाठशाला में दूरस्थ क्षेत्रों के किसानों से भी सीधे संवाद स्थापित करने का अवसर प्रदान कर रही है। यह बात सोमवार को प्रदेश के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने किसान पाठशाला के वर्चुअल कार्यक्रम के दौरान कही। कृषि मंत्री शाही मिलियन फार्मर्स स्कूल कार्यक्रम का उद्घाटन एनआईसी केन्द्र योजना भवन लखनऊ में कर रहे थे। उन्होंने कहा कि किसान पराली का उपयोग खेती की उर्वरता बढ़ाने के लिए करें, जलाने में नहीं। इसका उपयोग बायो फ्यूल के रूप में भी किया जा रहा है, इसका लाभ भी किसान ले सकते हैं। प्रदेश सरकार द्वारा किसानों की आय बढ़ाने के लिए निरन्तर प्रयास किये जा रहे हैं। इसके लिए श्री अन्न की खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। साथ ही हाइब्रिड बीजों पर 50 प्रतिशत अनुदान दिया जा रहा है। ब्लाक स्तर पर स्टॉल लगाकर छूट वाले कृषि यंत्र किसानों को उपलब्ध कराये जा रहे हैं। अपर मुख्य सचिव कृषि डा0 देवेश चतुर्वेदी द्वारा कहा गया कि सरकार की प्रमुख योजनाओं को कृषकों तक पहुंचाने हेतु किसान पाठशाला एक प्रभावी प्लेटफार्म है। कृषि वैज्ञानिक डा0 वाई0पी0 सिंह द्वारा फसल अवशेष से नाइट्रोजन बढ़ाने, डा0 गजानन एस द्वारा श्री अन्न की खेती का विस्तार करने पर जानकारी दी गयी। इस कार्यक्रम के दौरान प्रदेशभर के 50 हजार स्थानों से प्रगतिशील किसान तथा अन्य किसान लाइव जुड़े हुए थे।

किशोर के फांसी लगा आत्महत्या करने के मामले में उकसाने का मुकदमा दर्ज

खबर दृष्टिकोण

आलमबाग। कृष्णा नगर कोतवाली क्षेत्र के बारावीरवा में बीते 31 जुलाई की शाम 16 वर्षीय किशोर द्वारा घर में फांसी लगा आत्महत्या कर लेने के मामले में परिजनों ने रिस्तेदार व उसकी बेटी के खिलाफ आत्महत्या के लिए प्रेरित करने का मुकदमा दर्ज कराया है। कृष्णा नगर कोतवाली क्षेत्र में बीते 31 जुलाई को की शाम करीब 10:00 बजे 16 वर्षीय सत्यम वर्मा पुत्र गौरी शंकर निवासी 569 / 363 बरगंवा घर में फांसी लगा आत्महत्या कर ली थी मामले में मृतक किशोर के पिता ने अपने रिस्तेदार अभिलया खेड़ा निवासी राम औतार , जमुना पत्नी राम औतार एवं शोभा पुत्री राम औतार के खिलाफ आत्महत्या के लिए उकसाने का आरोप लगा लिखित शिकायत की है। पुलिस शिकायत आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कार्यवाई में जुटी है। मृतक किशोर के पिता के मुताबिक रिश्ते आरोपी रिश्ते में उसके साली व साढू लगते है। घटना वाले दिन रात्रि समय उनके रिस्तेदार के नंबर ने उनके छोटे बेटे को फोन करके जाने क्या बात कहा था जिसके बाद उनके बेटे ने कमरे में जाकर फांसी लगा ली थी जिसे वह लोग अस्पताल लेकर गए जहाँ डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया था। इंस्पेक्टर कृष्णा नगर विक्रम सिंह के मुताबिक मृतक के पिता की शिकायत पर मुकदमा दर्ज कर आरोपियों के खिलाफ कार्यवाई किया जा रहा है।

अमित चौरसिया बने भारतीय चौरसिया महासभा के नए जिलाध्यक्ष

खबर दृष्टिकोण

गाजीपुर। भारतीय चौरसिया महासभा, संगठन के गाजीपुर जिला कार्यकारिणी मेंनिर्वतमान जिला प्रभारी मोतीचंद्र चौरसिया एवं पूर्व अन्य बेहद सक्रिय पदाधिकारियों के प्रयास से,,,, शीर्ष नेतृत्व, राष्ट्रीय अध्यक्ष ;नेता अपना दल एसद्ध के अनुमोदन पर जिला कार्यसमिति के तीनो इकाई के जिला अध्यक्ष नियुक्त हुए। जनपद के प्रतिष्ठित व्यापारी, प्रकाश इंडस्ट्रीज गाजीपुर के मालिक एवं समाजसेवी ग्राम पोस्ट ढढनी गाजीपुर निवासी अमित चौरसिया को गाजीपुर (मुख्य) जिलाध्यक्ष एवं इसी ग्राम सभा की पूनम राजेश चौरसिया (निर्वाचित सदस्य, ग्राम पंचायत ढढनी) को महिलामोर्चा जिलाध्यक्ष एवं ग्राम पोस्ट सुहवल निवासी सोनू प्रसाद चौरसिया (निर्वाचित सदस्य, क्षेत्र पंचायत रेवतीपुर) को युवा जिलाध्यक्ष गाजीपुर नियुक्त किया गया है संगठन के संविधान अनुसार उक्त नियुक्ति सभी पदाधिकारियों की 4 वर्ष के लिए मान्य है। पदाधिकारियों की नियुक्ति से संगठन के सभी वर्तमान एवं पूर्व पदाधिकारियों वं सदस्यों सहित जनपद के समाजसेवियों में खुशी का माहौल है संगठन की वरिष्ठ पदाधिकारी, पूर्व महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष, प्रेमलता चौरसिया (पूर्व सदस्य, जिला योजना समिति गाजीपुर उ.प्र. सरकार) ने, एवं जनपद के सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता राष्ट्रीय पिछड़ावर्ग संघ सामाजिक संगठन के युवा प्रदेश अध्यक्ष राजन प्रतीक चौरसिया जी ने, ऊक्त संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष विजय चौरसिया ने, पूर्व महिलामोर्चा प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती सरिता हरेंद्र चौरसिया जी ने, पूर्व पूर्वांचल प्रभारी श् हरेंद्र जी ने जनपद उन्नाव के जिलाध्यक्ष शिवम जी, प्रदेश मीडिया प्रभारी श्री प्रिंस चौरसिया, रत्नम चौरसिया सहित अमन चौरसिया, संदीप यादव, प्रशांत चौरसिया, रवि वर्मा, सहित संगठन के सैंकड़ों पदाधिकारियों साथियों ने फोन कर जिलाध्यक्ष अमित जी के साथ सभी नव नियुक्त पदाधिकारियोंको बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित कर उज्जवल कार्यकाल की कमाना किए।

लखनऊ में एक सितंबर से 500 रुपये प्रति हजार महंगी हो जाएंगी ईंटें

लखनऊ (संवाददाता)। लखनऊ में एक सितंबर से ईंट महंगी हो जाएगी। ईंट भट्ठा के कारोबार से जुड़े लखनऊ ब्रिक क्लिन एसोसिएशन ने रविवार को एक बैठक कर बढ़ोतरी का फैसला लिया है। एक सितंबर से ईंट का रेट 7500 रुपये से बढ़ाकर 8000 रुपये प्रति हजार हो जाएगा। लखनऊ ब्रिक क्लिन एसोसिएशन के अध्यक्ष एडवोकेट अमरेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि कोयला और डीजल की कीमतें बढ़ने की वजह से निर्माण लागत भी बढ़ी है।

खबर एक नजर में

बच्चे की पिटाई के बाद पति से विवाद पर पत्नी ने लगाई फांसी

खबर दृष्टिकोण

आलमबाग। आशियाना थाना क्षेत्र में रहने वाली एक विवाहिता ने पति से कहासुनी के बाद रविवार रात पंखे के हुक में साड़ी से फांसी लगा अपनी जान दे दी। विवाहिता का फंदे से लटका शव देख परिजन आनन फानन में लोकबन्धु अस्पताल ले गए। जहाँ जांच के बाद चिकित्सकों ने मृत घोषित कर पुलिस को सुचना दे दी। सूचना पर पहुंची कृष्णा नगर पुलिस ने मृतका के शव का पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। आशियाना के किला चौकी इंचार्ज विपिन कुमार के मुताबिक मृतका 26 वर्षिय मीना पत्नी अमित कुमार आशियाना थाना क्षेत्र स्थित फिरंगी खेडा गाँव में एक किराए के मकान में रहकर चौका बर्तन साफ सफाई का काम करती थी। जबकि उसका पति अमित पेशे से मजदूरी का काम करके अपने दो बच्चों का पालन पोषण कर रहा था। वही पुलिस के अनुसार मृतका का किराए के मकान का बिजली का बिल करीब नौ दस महीने से बाकी था। जिसको लेकर रविवार रात्रि पति पत्नी में कहासुनी हो गई और मृतका ने गुस्से में आकर घर में लगे पंखे के हुक में साडी से फांसी लगा आत्महत्या कर ली गई। पुलिस के अनुसार मृतका के पास से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।

घर के बाहर खड़ी हाफ डाला चोरी

खबर दृष्टिकोण

आलमबाग। आशियाना थाना क्षेत्र से बेखौफ चोरों ने शनिवार देर रात घर के बाहर खड़ा हाफ डाला चोरी कर फरार हो गए।चोरी की जानकारी होने पर पीडित ने स्थानीय थाने थाने पर अज्ञात चोरो के खिलाफ शिकायत की है। आशियाना थाना क्षेत्र स्थित मिर्जापुर, नियर जलवायु विहार कालोनी में रहने वााले आजाद राजपूत पुत्र रामगोपाल राजपूत ने बताया कि उन्होंने बीते 5 अगस्त की रात को छोटा हाथी डाला नम्बर यूपी 32 एम एन 5842 को अपने घर के बाहर खडा किया था। जो रविवार सुबह अपने स्थान पर मौजूद नहीं था। जिसकी खोजबीन करने के बाद स्थानीय थाने में पुलिस से लिखित शिकायत की है। आशियाना कार्यवाहक प्रभारी निरीक्षक राजेन्द्र वर्मा ने बताया कि पीडित की शिकायत पर चोरी की धारा में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। चोरो की तलाश की जा रही है।

दो दिवसीय सांस्कृतिक व सांगीतिक वार्षिकोत्सव स्पंदन - 2023 कार्यक्रम सफल रूप से संपन्न हुआ

बच्चो ने नृत्य, गायन और वादन की मनमोहक प्रस्तुति से दर्शकों को मन्त्र मुग्ध कर दिया।

खबर दृष्टिकोण

लखनऊ। लिरिक्स अकादमी ऑफ म्यूजिक का 16 वां दो दिवसीय सांस्कृतिक व सांगीतिक वार्षिकोत्सव स्पंदन - 2023 कार्यक्रम के सफल आयोजन में आज दूसरे दिन की शुरूआत में भी जोरदार अंदाज में नृत्य गायन व इन्स्ट्रूमेंट के बच्चों द्वारा आलिया भट्ट के प्रसि) ढोलिदा गाने पर गरबा डान्स के द्वारा प्रदर्शित करके हुई। इन्ट्रूमेण्टल परफारमेन्स हो या डान्स या सुरों का जादू नये कलाकारों का हुनर देख दर्शक उनकी तारीफ किए बिना नहीं रुक सके। कार्यक्रम में गायन के छात्र छात्राओं ने तुमसे मिलके दिलका है जो की क्लासीकल अन्दाज में सुरमई प्रस्तुति दी। इन्ट्रूमेन्टस में बॉसूरी, गिटार वायलन, तबला, कीबोर्ड व ड्रम्स के बच्चों ने कई गीतो पर शानदार जुगल बन्दी पेश की। जब गायन के छोटे बच्चों ने बदतमीज दिल गाना गाया तब कीबोर्ड के बच्चों ने उनके साथ कदम से कदम मिलाते हुये संगत की। नृत्यविभाग के बच्चों ने जहाँ एक ओर शहर की लड़की गाने पर भरतनाट्यम की भावपूर्ण प्रस्तुति की, वही दूसरी ओर कथक की छात्राओं ने फेरो न नजरिया, घोडे पे सवार, मोहे पनघट पे जैसे गानों पर कथक की परफारमेंन्स दे दर्शको को मंत्र मुग्ध कर दिया। वेस्टर्न डान्स के छोटे छोटे प्रतिभागियों ने बादल पे पॉव लेट्स नाचों, ड्रामा क्वीन की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में संस्थान के लगभग 600 स्टूडेन्स शामिल हुए जिन्हें अन्त में डायरेक्टर्स राहुल वर्मा व अक्षय सिंह के द्वारा सर्टीफिकेट वितरित किये गये और संस्थान के शिक्षकों को भी उनके योगदान व सहयोग के लिए सम्मानित किया गया।

राजकीय आई0टी0आई0 के कैम्पस ड्राइव में 150 अभ्यर्थियों को मिला जॉब आफर

खबर दृष्टिकोण

लखनऊ। राजकीय आई0टी0आई0, अलीगंज, लखनऊ में टाटा मोटर्स लि0 लखनऊ के द्वारा कैम्पस ड्राइव का उद्घाटन प्रधानाचार्य राज कुमार यादव के द्वारा किया गया। ट्रेनिंग काउंसिलिंग एण्ड प्लेसमेन्ट आफिसर एम. ए. खां ने बताया कि कैम्पस ड्राइव में लगभग 370 अभ्यर्थियों ने प्रतिभाग किया जिसमें से 150 अभ्यर्थियों को कम्पनियो द्वारा 13,600 रूपये प्रतिमाह के वेतन एवं अन्य सुविधाओं पर जॉब आफर दिये गये। जो अभ्यर्थी रोजगार मेले से वंचित रह गये है वे अभ्यर्थी 14 अगस्त 2023 को राजकीय आई0टी0आई0 अलीगंज, लखनऊ में होने वाले प्रधानमंत्री राष्ट्रीय अप्रेन्टिसशिप मेले में प्रतिभाग कर सकते हैं।

ई-पीओएस पीओएस मशीनों के लिए इच्छुक बैंकर्स 10 अगस्त तक करें आवेदन

खबर दृष्टिकोण

लखनऊ। संयुक्त निदेशक कृषि प्रसार शिक्षा एवं प्रशिक्षण ब्यूरो डॉ आशुतोष कुमार मिश्र ने जानकारी दी है कि उत्तर प्रदेश के प्रत्येक विकास खंड स्तर पर स्थापित कृषि विभाग के राजकीय कृषि बीज भंडारें एवं कृषि रक्षा इकाई के माध्यम से कृषकों को कृषि निवेश की उपलब्धता सुनिश्चित कराई जाती है। इन केंद्रों के माध्यम से उपलब्ध कराए जा रहे कृषि निवेशों को ओटीपी बायोमैट्रिक आधार ऑथेंटिकेशन इनेबल ई-पीओएस पीओएस के माध्यम से वितरित किया जाना प्रस्तावित है, इस कार्य हेतु इच्छुक बैंक से प्रस्ताव आमंत्रित है। इन ई-पीओएस पीओएस मशीनों के माध्यम से कृषकों के आधार ऑटिकेटशन करते हुए। कृषि निवेश का वितरण कराया जाना है, जिसके लिए बैंक के माध्यम से उपलब्ध कराए जाने वाले ई-पीओएस पीओएस एवं एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर को विभागीय पोर्टल से इंटीग्रेट कर सेवा उपलब्ध कराई जाएगी। उक्त के संदर्भ में इच्छुक बैंकर्स अपना प्रस्ताव दिनांक 10 अगस्त, 2023 तक कृषि निदेशालय के आईटी प्रकोष्ठ में उपलब्ध कराया जा सकते हैं।

प्रो सुनील कुमार ने अनुसूचित जनजाति थारू महिलाओं संबंधित शोधपत्र किया प्रस्तुत

आचार्य नरेंद्र देव टीचर ट्रेनिंग कॉलेज सीतापुर के प्रोफेसर राष्ट्रीय संगोष्ठी में किया प्रतिभाग

खबर दृष्टिकोण

लखनऊ। सीतापुर आचार्य नरेंद्र देव टीचर ट्रेनिंग कॉलेज के प्रोफेसर सुनील कुमार जी ने एम एम वी, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा अनुसूचित जनजाति की महिलाओं के राष्ट्रीय विकास में योगदान संबंधी राष्ट्रीय संगोष्ठि में ए एन डी टी कॉलेज सीतापुर के प्रो सुनील कुमार ने अनुसूचित जनजाति थारू महिलाओं संबंधित शोधपत्र प्रस्तुत किया। इस संगोष्ठी के मुख्य अतिथि प्रो कट्टीमनी कुलपति राष्ट्रीय अनुसूचित जाति विश्वविद्यालय, आंध्र प्रदेश रहे तथा समापन समारोह की मुख्य अतिथि ड्श्च दीपाली रावल,सदस्य, अनुसूचित जनजाति,राजभवन भोपाल, मध्य प्रदेश रहीं। इस सेमिनार में देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों व संस्थानों से शिक्षाविद व शोधकर्ता उपस्थित रहे व अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया।

किसानों की समीक्षा बैठक संपन्न हुई

खबर दृष्टिकोण

लखनऊ। भारतीय किसान यूनियन मजदूर यूनियन राष्ट्रवादी जिस के राष्ट्रीय अध्यक्ष पुष्पराज सिंह प्रदेश अध्यक्ष राम रखन मौर्य जिला मीडिया प्रभारी सुशील कुमार शुक्ला जिला महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष राम लली पाल मंडल उपाध्यक्ष विजय कुमार शुक्ला एवं अन्य पदाधिकारी भारी संख्या में किसान जनपद सीतापुर में नेहरू हश्चल जिला पंचायत भवन सीतापुर मे किसानों की समस्या को लेकर समीक्षा बैठक की गई जिसमें संगठन को मजबूत करने की बात कही गई किसानों की समस्या को न सुनने के विषय पर उच्च अधिकारियों को बताएं और फिर भी न सुनी जाए तो वहीं पर धरना दो किसान की फसल का उचित मूल्य मिले आवारा पशुओं के द्वारा सरकार पर निशाना साधते कहा गौशालाओं का औचक निरीक्षण करें आवारा पशुओं को गौशालाओं में बंद करवाए गन्ने की रेट के बारे में भी 450 के लगभग करने को कहा अभी किसानों को किसानों की फसल का उचित मूल्य नहीं मिल पा रहा है यह भी कहा गया किसान हित में सरकार काम करे किसान का नाम ही समस्या है गेहूं का मूल्य कम से कम 9000 रु कुंतल होना चाहिए बात कही समर्थन मूल्य का कानून बनना चाहिए।

जीआरपी चारबाग ने कंट्रोल रूम की सूचना पर चंद घंटो में गुमशुदा महिला को बरामद कर किया परिजनों के सुपुर्द

खबर दृष्टिकोण

लखनऊ। लखनऊ चारबाग रेलवे स्टेशन जीआरपी पुलिस द्वारा पंचकूला चंडीगढ़ से गुमशुदा हुई महिला को जीआरपी कंट्रोल रूम की सूचना पर सोशल मीडिया के माध्यम से गुमसुदा युवती को जीआरपी पुलिस ने चंद ही घंटों में रेलवे स्टेशन चारबाग से तलाश कर परिवार के सुपुर्द किया गया। पंचकुला, चंडीगढ़ से गुमसुदा हुई महिला की मोबाइल के द्वारा प्रभारी निरीक्षक संजय खरवार चारबाग को सूचना दी कि छोटी बहन को घर से बिना बताये चली गयी जिसके चारबाग लखनऊ पर होने के बारे में सूचना मिली है । जिस सूचना पर थाना जीआरपी चारबाग के द्वारा तुरन्त संज्ञान लेते हुए सूचनाकर्ता की बहन को रेलवे स्टेशन चारबाग पर तलाश कराया गया, पुलिस द्वारा तलाश कराये जाने पर उक्त महिला रेलवे स्टेशन चारबाग पर मिली जिन्हे थाना जीआरपी चारबाग लेकर आया गया और परिजनो को सूचना दी गयी । सूचना पर पहुंचे परिजनों ने गुमसुदा महिला को अपने सुपुर्द में ले लिया इस दौरान गुमसुदा महिला के परिजनों ने पुलिस के इस सराहनीय कार्य की खूब प्रसंसा की।

मानसिक विक्षिप्त युवक का अर्धनग्न हालत में पड़ा मिला शव

निगोहां के नंदौली गांव स्थित ननिहाल में रहने वाले मानसिक विक्षिप्त युवक का अर्धनग्न हालत में शेरपुर लवल गांव में पड़ा मिला शव

मोहनलालगंज ।निगोहां थाना क्षेत्र म के शेरपुर गांव के पास एक खडंजे पर बनी पुलिया पर सोमवार को मानसिक विक्षिप्त युवक का अर्धनग्न हालत में शव पड़ा मिला ।सूचना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस को जांच के दौरान शव मिलने वाले स्थान से कुछ दूरी ओर एक मकान के बाहर मृतक युवक का झोला रखा मिला ।जिसे पुलिस ने कब्जे में लेने के साथ ही मृतक युवक के शव को कब्जे में लेकर पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिये भेजा है। रायबरेली जनपद के बछरांवा थाना क्षेत्र के मल्लीपुर निवासी बहादुर रावत (20वर्ष)अपनी विधवा मां कलावती के साथ अपनी ननिहाल निगोहां के नदौंली गांव में रहता था,मां व बेटा दोनो मानसिक रूप से

विक्षिप्त थे, सोमवार को 12:00 बजे युवक बहादुर का शव अर्धनग्न हालत में शेरपुर–लवल गांव के बाहर खडंजे पर बनी पुलिया के पास पड़ा मिला। उधर से गुजरे ग्रामीणो ने युवक का शव पड़ा देख पुलिस को सूचना दी,जिसके बाद इंस्पेक्टर विनोद यादव ने पुलिस फोर्स के साथ मौके पर पहुंचकर जांच पड़ताल शुरू की तो 20मीटर दूर एक मकान के बाहर मृतक का झोला रखा मिला ओर पास में चप्पले पड़ी मिली ।पुलिस को झोले के अंदर तम्बाकू की पुड़िया व कुछ सब्जिया रखी मिली ।सूचना के बाद मृतक के ननिहाल से परिजनो के मौके पर पहुंचने के बाद पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिये भेजा ।ममेरे भाई शिवराम ने बताया मानसिक सतुंलन ठीक ना होने से बहादुर इधर उधर घूमा करता था ओर कभी कभार ही घर आता था ।इंस्पेक्टर विनोद यादव ने बताया मृतक युवक के शव को कब्जे में लेकर पीएम के लिये भेजा गया है,रिपोट आने के बाद ही मौत का कारण स्पष्ट हो सकेगा,प्रथम दृष्टया जांच में युवक की किसी बीमारी के चलते मौत होने की आंशका हैं।

निगोहा में तीन सड़क दुर्घटनाओ में एचसीएलकर्मी समेत राजगीर की मौत,तीन घायल

मोहनलालगंज ।निगोहां थाना क्षेत्र में सोमवार को हुयी तीन अलग –अलग सड़क दुर्घटनाओं में एचसीएल कर्मी समेत राजगीर की मौत हो गयी ।दुर्घटनाओ में तीन लोग घायल हो गये,जिन्हे इलाज के लिये ट्रामा सेंटर भेजा गया ।पुलिस ने मृतक एचसीएल कर्मी व राजगीर के शव को कब्जे में लेकर पचंनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिये भेजा हैं।पुलिस ने दुर्घटना करने वाले वाहनो को कब्जे में ले लिया हैं।पहली दुर्घटना निगोहां के सुदौली मोड़ पर हुई जहां सोमवार की सुबह एचसीएलकर्मी शुभम शर्मा (26वर्ष)निवासी जोशीपुरम,आजादनगर थाना सरोजनीनगर अपने दोस्त हरेन्द्र यादव निवासी हाइड्रिल थाना सरोजनीनगर के साथ पल्सर बाइक से भवरेश्वर बाबा मंदिर दर्शन करने जा रहा था ओर उसकी बाइक रायबरेली की तरफ से आ रही तेज

रफ्तार कार से टकरा गयी,दुर्घटना में शुभम व उसका दोस्त गम्भीर रूप से घायल हो गये ।राहगीरो की सूचना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने दोनो घायलो को इलाज के लिये एम्बुलेंस की मदद से सीएचसी लेकर गयी,जहां डाक्टर ने शुभम को मृत घोषित कर दिया ओर प्राथमिक उपचार के बाद गम्भीर रूप से घायल हरेन्द्र को इलाज के लिये ट्रामा सेंटर भेजा ।सूचना के बाद परिजन मौके पर पहुंचे तो कोहराम मच गया ।मृतक शुभम के परिवार में पिता जगदीश चन्द्र शर्मा व मां सरला,बहन रितिका व भाई ओम प्रकाश है ।पुलिस ने परिजनो के मौके पर आने के बाद मृतक शुभम के शव का पंचनामा भरकर पीएम के लिये भेजा ।दूसरी सड़क दुर्घटना निगोहां कस्बे में स्थित आर्यावर्त ग्रामीण बैंक के पास हुयी,पैदल सड़क पार कर बैंक में पासबुक जमा करने जा रहे राजगीर राजकिशोर(45वर्ष)निवासी ब्रम्हदासपुर थाना निगोहां को तेज रफ्तार बाइक सवार रवि वर्मा निवासी शिवगढ जनपद रायबरेली ने जोरदार टक्कर मार दी ।दुर्घटना में राजगीर समेत बाइक सवार गम्भीर रूप से घायल हो गया ।सूचना के बाद मौके पर पहुंची एन एच आई की एम्बुलेंस दोनो घायलो को इलाज के लिये बछरावा सीएचसी लेकर गयी,जहां प्राथमिक उपचार के बाद राजगीर की हालत गम्भीर देख रायबरेली जिला अस्पताल रिफर कर दिया,जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गयी ।मृतक राजगीर के परिवार मेंपत्नी नंनका देवी व चार बेटे अनिल, दयाराम, राजन,जुगेंद्र व दो बेटियां संगीता ,सुनीता है। तीसरी सड़क दुर्घटना निगोहां के सुदौली मोड़ पर हुयी,जहां भवरेश्वर मंदिर से दर्शन कर लौटते समय मुकेश रावत निवासी बदनखेड़ा थाना निगोहां की बाइक अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गयी,दुर्घटना में मुकेश गम्भीर रूप से घायल हो गया ।सूचना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने घायल मुकेश को एम्बुलेंस की मदद से इलाज के लिये सीएचसी भेजा ।इंस्पेक्टर विनोद यादव ने बताया परिजनो के तहरीर देने पर दुर्घटना करने वाले वाहनो के विरूद्व मुकदमाद दर्ज कर कार्यवाही की जायेगी।

सदिग्धं परिस्थितियों में युवती लापता

मोहनलालगंज ।मोहनलालगंज पुलिस से युवक ने लिखित शिकायत करते हुये बताया उसकी 20वर्षीय बहन बीते शनिवार को मोहनलालगंज से बस पकड़कर इलाहाबाद मां के पास जाने के लिये निकली थी लेकिन घर नही पहुंची काफी खोजबीन के बाद लापता बहन का कुछ भी पता नही चल सका है ।पीड़ित भाई ने आशंका जताई है उसकी बहन युवक हरीश निवासी अभयपुर जनपद लखीमपुर से बातचीत करती है,वही उसे बहला–फुसलाकर अपने साथ भगा ले गया हैं ।इंस्पेक्टर ने बताया पीड़ित भाई की तहरीर पर युवती की गुमशुदगी दर्ज कर तलाश शुरू कर दी गयी हैं।

दम्पत्ति को लात-घुसो से पीटा,मुकदमा दर्ज

मोहनलालगंज ।मोहनलालगंज के धर्मावतखेड़ा गांव निवासी सविता ने पुलिस से शिकायत करते हुये बताया रविवार को उसके जेठ अश्वनी ने अम्बार का पेड़ तोड़ने का आरोप लगाकर अपनी पत्नी लक्ष्मी समेत अखिलेश,राज,चांदनी के साथ मिलकर पति बिन्दू व उसकी घर में घुसकर लात घूसो व सरियों से बुरी तरह पिटाई कर घायल कर दिया ।आरोपी जेठ ने पुलिस से शिकायत करने पर जान से मारने की धमकी दी ।इंस्पेक्टर ने बताया पीड़िता की तहरीर पर आरोपियों के विरुद्व मारपीट समेत अन्य धाराओ में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी गयी हैं।

बिना अनुमति गैर जनपद जाकर साथी संग हगांमा करने वाला हेड कांस्टेबल निलंबित

डीसीपी दक्षिणी ने मामले को संज्ञान मे लेकर हेड कांस्टेबल को किया निलंबित

मोहनलालगंज ।लखनऊ पुलिस कमिश्नरेट के दक्षिणी जोन की क्राइम टीमद्य में तैनात हेड कास्टेबल सौरभ दीक्षित अपनेद्य साथी संग बीते रविवार की देर रात कार से कन्नौज के तिर्वा गये थे,जहां साथी संग एक पान की दुकान मेंजमकर हगांमा काटा था,हेड कास्टेबल के साथ मौजूद शराब के नशे में धुत साथी ने पिस्टल हाथ में निकालकर दुकानदार को पान लगाने के लिये धमकाया था,पूरे मामले का वीडियों सोशल मीडिया पर वायरल होने पर तिर्वा पुलिस ने कार के नम्बर के आधार पर हगांमा करने वाले दो के विरूद्व मुकदमाद्य दर्ज किया था ।पूरे मामले की जानकारी होने पर डीसीपी दक्षिणी विनीत

जायसवाल ने सोमवार को बिना अनुमति गैर जनपद जाकर हगांमा करने वाले हेंड कांस्टेबल को निलंबित कर दिया हैं।प्राप्त जानकारी के अनुसार कन्नौज जनपद के तिर्वा कोतवाली क्षेत्र के फगुआ भट्टा निवासी पंकज बाथम की तिर्वा–कन्नौज रोड पर पान और कोल्डड्रिंक की दुकान है ।बीते रविवार की रात के वक्त जब वह अपनी दुकान बंद के रहे थे, तभी वहां कानपुर नम्बर की एक कार आकर रुकी। जिसमें से 2 लोग उतरे और दुकानदार को पान लगाने को बोला। जिस पर दुकानदार ने 2 मिनट इंतजार करने को कहा। इससे कार सवार दोनों लोग भड़क गए। एक व्यक्ति ने हाथ मेंपिस्टल निकाल ली और गाली गलौज करने लगा ।तुरन्त पान न लगाने पर अंजाम भुगतने की चेतावनी दी। वह लोग खुद को एसओजी टीम का सदस्य बता रहे थे। हंगामा होता देख लोगों की भीड़ लग गई। कुछ लोग मोबाइल से वीडीओ बनाने लगे तो पिस्टल दिखाकर धमकाने वाले दोनों व्यक्ति कार में बैठकर निकल गए। बताया गया कि दोनों नशे में थें ।सोमवार को सोशल मीडिया पर वीडियों वायरल होने पर हगांमा करने वाले एक युवक की पहचान सौरभ दीक्षित के रूप में हुयी जो कि लखनऊ कमिश्नरेट पुलिस के दक्षिणी जोन की क्राइम टीम में हेड कास्टेबल के पद पर तैनात हैं।जिसके बाद डीसीपी दक्षिणी विनीत जायसवाल ने बिना अनुमति गैर जनपद जाकर हगांमा करने वाले हेड कांस्टेबल को निलंबित कर दिया हैं।

दबंगों ने दीवार किया ध्वस्त, भू स्वामी संग गाली गलौज कर दी धमकी, मुकदमा दर्ज

खबर दृष्टिकोण

आलमबाग। कृष्णा नगर कोतवाली थाना क्षेत्र में दबंगों ने एक पुरानी दीवार ध्वस्त करने के साथ भू स्वामी संग गाली गलौज करने के साथ जान से मारने की धमकी दी है। पीडित की शिकायत पर पुलिस ने गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है और मामले की जांच में जुटी है। कृष्णा नगर कोतवाली प्रभारी विक्रम सिंह ने बताया कि थाना क्षेत्र स्थित मकान संख्या 555ख/4/82 भोलाखेडा में रहने वाले महेश पाल पुत्र स्व मेकूलाल पाल ने बताया कि वह निजी व्यवसाय करते हैं। उन्होंने बीते करीब 15 वर्ष पूर्व उन्होंने खसरा संख्या 736 मे प्लाटिंग मे रास्ता अपनी कालोनी के लिए बनायी थी और उची दिवाल भी बनाया था। आरोप है कि बीते 6 अगस्त की सुबह करीब 10 बजे लालाखेडा व अली नगर सुनहरा के रहने वाले राघवेन्द्र यादव उर्फ सतनू , अनिल यादव ,मुकेश यादव , देवेन्द्र यादव , गुड्डे पण्डित, राजा राम यादव सुनील रावत समेत कुछ अन्य लोगों ने उनके संग गाली गलौज व जान से मारने की धमकी देने के साथ उनकी दिवाल गिरा दिया है ।आरोपियों की करतूतें उक्त स्थान पर लगे सीसीटीवी कैमरे मे मौजूद है। पुलिस के मुताबिक पीडित की शिकायत पर उपद्रव, गाली गलौज व धमकी की धारा में मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच की जा रही है।

यूपी में आज से चार दिन नहीं जमा होंगे बिजली के बिल, न ही बकाया बिल पर कनेक्शन काटा जाएगा

लखनऊ (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश में मंगलवार की सुबह से लखनऊ समेत सभी ऑनलाइन बिलिंग केंद्रों पर चार दिन (10 अगस्त) तक बिजली बिल जमा नहीं हो सकेंगे और न ही गलत रीडिंग के बिल का संशोधन हो सकेगा। साथ ही, कार्यालयों के कामकाज पर भी असर पड़ेगा। इससे लखनऊ, कानपुर, प्रयागराज, वाराणसी, गोरखपुर, अयोध्या, बरेली, अलीगंज, झांसी, बरेली, मेरठ एवं गाजियाबाद सहित सभी जनपदों के शहरी एवं ग्रामीण उपभोक्ता बिजली का बिल जमा नहीं कर पाएंगे। हालांकि ऑनलाइन बिजली बिल पेमेंट करने वालों की सुविधा तो सात अगस्त की रात 10रू00 बजे से ही बंद कर दी जाएगी।

इस संबंध में यूपी पावर कारपोरेशन के निदेशक (आईटी) सौर्वजीत घोष ने पूर्वांचल वाराणसी, मध्यांचल लखनऊ, पश्चिमांचल मेरठ, दक्षिणांचल आगरा और केस्को विद्युत वितरण निगम कानपुर के प्रबंध निदेशक को सरकुलर भेज कर बिजली बिल के भुगतान में आए व्यवधान की सूचना भेज दी है। इस सरकुलर में कहा गया कि 7 अगस्त की रात 10रू00 से 10 अगस्त की शाम 6रू00 बजे तक कारपोरेशन का ऑनलाइन सिस्टम पूरी तरीके से बाधित रहेगा। इस दौरान एक्सपर्ट की टीम सॉफ्टवेयर और सिस्टम को विकसित करने का काम करेगी। इसके कारण बिजली बिल के संशोधन के साथ ही अन्य कार्यालय के अन्य कामकाज पर भी असर पड़ेगा। मध्यांचल निगम के निदेशक (वाणिज्य) योगेश कुमार ने बताया कि 10 अगस्त की शाम छह बजे के बाद बिल जमा होने का सिलसिला शुरू हो सकेगा। नहीं कटेगी बिजलीरू प्रदेश भर में जब तक बिल भुगतान की सुविधा बंद रहेगी तब तक उपभोक्ता की बाकी बिल पर बिजली नहीं कट सकेगी।

न्यायालय में प्रचलित वादों में एक सप्ताह में दाखिल नहीं किये शपथ पत्र तो रूकेगा वेतन

अर्जन, प्रवर्तन, अभियंत्रण व सम्पत्ति अनुभाग के सर्वाधिक प्रकरणों में शपथ पत्र दाखिल न होने पर उपाध्यक्ष ने अधिकारियों व कर्मचारियों को लगायी फटकार

गोमती नगर क्षेत्र में अर्जन का कार्य देखने वाले सर्वेयर दिलीप कुमार को लापरवाही पर तत्काल प्रभाव से किया गया निलम्बित

खबर दृष्टिकोण

लखनऊ। लखनऊ विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष डॉ0 इन्द्रमणि त्रिपाठी ने सोमवार को विधि अनुभाग से सम्बंधित कार्यों की समीक्षा बैठक की। इसमें पाया गया कि बड़ी संख्या में न्यायालय में प्रचलित वादों में प्राधिकरण की तरफ से शपथ पत्र दाखिल नहीं किये गये हैं। इस पर उपाध्यक्ष ने नाराजगी जाहिर करते हुए सम्बंधित अधिकारियों व कर्मचारियों को कड़ी फटकार लगायी ।समीक्षा में लापरवाही उजागर होने पर उपाध्यक्ष ने गोमती नगर क्षेत्र में अर्जन का कार्य देखने वाले सर्वेयर दिलीप कुमार को तत्काल प्रभाव से निलम्बित कर दिया। उपाध्यक्ष ने समस्त प्रकरणों में एक सप्ताह के अंदर शपथ पत्र योजित करने का अल्टीमेटम दिया है। इसमें लापरवाही पाये जाने पर सम्बंधित का वेतन रोकने के आदेश जारी किये गये हैं। बैठक के दौरान उपाध्यक्ष डॉ0 इन्द्रमणि त्रिपाठी द्वारा न्यायालय में प्रचलित वादों की अनुभाग वार समीक्षा की गयी। इसमें पाया गया कि प्रवर्तन अनुभाग के 189, अर्जन अनुभाग के 173, अभियंत्रण अनुभाग के 117 तथा सम्पत्ति अनुभाग से सम्बंधित 91 प्रकरणों में न्यायालय में प्राधिकरण की तरफ से शपथ पत्र ही नहीं योजित किये गये हैं। जिससे कि न्यायालय में प्रचलित इन वादों में प्राधिकरण का पक्ष कमजोर होता है। इस पर उपाध्यक्ष ने नाराजगी जताते हुए सम्बंधित अधिकारियों व कर्मचारियों को कड़ी फटकार लगायी ।उपाध्यक्ष ने अर्जन अनुभाग के सभी अमीनों को मीटिंग हॉल में बुलाकर अलग–अलग प्रकरणों में रिपोर्ट तलब की तो पता चला कि कई वाद ऐसे हैं, जिनमें प्रभावी पैरवी करने से प्राधिकरण को करोड़ों रूपये की जमीन मिल सकती है। इस पर उपाध्यक्ष ने प्रभारी अर्जन एस0डी0एम0 शशिभूषण पाठक को निर्देश दिये कि इन समस्त प्रकरणों में एक सप्ताह के अंदर शपथ पत्र दाखिल हो जाने चाहिए। इसी तरह अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों को भी अपने अनुभाग से सम्बंधित प्रकरणों में एक सप्ताह के अंदर न्यायालय में शपथ पत्र योजित करने का अल्टीमेटम दिया गया है। उपाध्यक्ष ने आदेश जारी किये कि अगले सप्ताह पुनः इन प्रकरणों की समीक्षा की जाएगी। इसमें लापरवाही पाये जाने पर सम्बंधित अधिकारियों व कर्मचारियों को प्रतिकूल प्रवृष्टि देने के साथ ही उनका मासिक वेतन आहरित नहीं किया जाएगा ।बैठक में अपर सचिव ज्ञानेन्द्र वर्मा, मुख्य विधि परामर्शदाता संजय कुमार शुक्ला, वित्त नियंत्रक दीपक सिंह, विशेष कार्याधिकारी प्रिया सिंह, रामशंकर, डी0के0 सिंह, राजीव कुमार, देवांश त्रिवेदी, श्रद्धा चौधरी, नजूल अधिकारी अरविंद त्रिपाठी, एस0डी0एम0 शशिभूषण पाठक, नगर नियोजक के0के0 गौतम, अधिशासी अभियंता मनोज सागर, के0के0 बंसला, संजीव कुमार गुप्ता, नवनीत शर्मा, उप सचिव माधवेश कुमार व सहायक लेखाधिकारी विनोद कुमार श्रीवास्तव समेत अन्य अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

सरकारी अस्पतालों में दवाओं की कमी का बढ़ता मर्ज दे रहा दर्द

लखनऊ (संवाददाता)। सरकारी अस्पतालों में मरीजों की भीड़ हर साल बढ़ रही है, जबकि इनको सप्लाई होने वाली जरूरी दवाओं की सूची छोटी होती जा रही है। ऐसे में मरीजों को मजबूरन बाहर से दवाएं लेनी पड़ रही हैं। स्थानीय स्तर पर खरीद की जो शर्तें हैं, उसमें एक साल के लिए किसी जरूरी दवा की खरीद की जो सीमा तय की गई है, उतनी दवा एक–डेढ़ महीने में ही खप जाती है। डॉक्टरों के मुताबिक शहर के अस्पतालों में हर साल कम से कम 10 फीसदी मरीज बढ़ जाते हैं। बलरामपुर जैसे अस्पताल में तो यह संख्या 15 फीसदी तक होती है। मरीजों को मुफ्त दी जाने वाली दवाएं ड्रग कॉरपोरेशन अस्पतालों को मुहैया कराता है। यह ड्रग कॉरपोरेशन वर्ष 2018 में बना। इसके अस्तित्व में आने से पहले स्वास्थ्य विभाग के रेट कॉन्ट्रैक्ट (आरसी) में करीब चार सौ दवाएं होती थीं। अस्तित्व में आने के बाद ड्रग कॉरपोरेशन ने स्वास्थ्य विभाग से दवाओं की सूची लेकर एसेंशियल ड्रग लिस्ट (ईडीएल) यानी जरूरी दवाओं की सूची तैयार की थी। इस सूची में 286 दवाओं को रखा गया था। ड्रग कॉरपोरेशन इसके बाद भी ईडीएल में शामिल दवाओं में से भी 40–50 तरह की दवाओं की आपूर्ति अस्पतालों को नहीं करता। पूरे साल अस्पतालों में दवाओं के संकट की खबरें आती रहती हैं और ड्रग कॉरपोरेशन अपनी दलीलें देता रहता है। ड्रग कॉरपोरेशन बनने से पहले अस्पतालों में गैस–एसिडिटी जैसी आम समस्या के इलाज में काम आने वाले डाईजीन सिरप की डिमांड के मुताबिक सप्लाई होती थी। पर, अब सभी अस्पतालों में यह सिरप नहीं मिलता। कारण–इसको ईडीएल से बाहर कर दिया गया। यही हाल बच्चों में लौहतत्व की कमी को दूर करने वाले आयरन ड्रॉप और विटामिन ए की कमी से होने वाली रतौंधी के इलाज में काम आने वाले एडी कैप्सूल का भी है। बवासीर की समस्या की शिकायतें अस्पतालों में खूब आती हैं। पर, इसके इलाज में काम आने वाला एनोवेट कैप्सूल अस्पतालों में नहीं मिलता। ईडीएल में शामिल सभी दवाओं की आपूर्ति भी ड्रग कॉरपोरेशन अस्पतालों को नहीं करता। बलरामपुर अस्पताल को महज 226 प्रकार की दवाएं ही कॉरपोरेशन देता है।

ओवरबर्डन से रेत का उत्पादन अनूठी पहल

राजीव आर. मिश्रा

कोयले का निष्कर्षण एक महत्वपूर्ण उप-उत्पाद के साथ होता है, जिसे ओवरबर्डन के नाम से जाना जाता है। कोयले के खुले खनन के दौरान, कोयले की परत के ऊपर स्थित परत को ओवरबर्डन के रूप में जाना जाता है, जिसमें प्रचुर मात्रा में सिलिका सामग्री के साथ मिट्टी, जलोढ़ रेत और बलुआ पत्थर शामिल होते हैं। नीचे से कोयला निकालने के लिए ओवरबर्डन को हटा दिया जाता है। बाद में, कोयला निष्कर्षण पूरा होने पर, भूमि को उसका मूल आकार प्रदान करने के लिए ओवरबर्डन का उपयोग बैकफिलिंग के लिए किया जाता है। ऊपर से ओवरबर्डन निकालते समय, मात्रा का स्वेल फैक्टर 20-25 प्रतिशत होता है। इस ओवरबर्डन को परंपरागत रूप से अपशिष्ट या बोझ माना जाता है और अक्सर इसके संभावित मूल्य को पहचाने बिना इसे ऐसे ही छोड़ दिया जाता है।

भले ही अपने उपभोक्ताओं के लिए कोयला/ लिग्नाइट का उत्पादन और वितरण करने का ही शासनादेश हो, फिर भी कोयला मंत्रालय के मार्गदर्शन में कोयला और लिग्नाइट सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) ने लीक से हटकर ओवरबर्डन से बहुत कम कीमत पर रेत का उत्पादन करने वाली एक अनोखी पहल की है। इस पहल से न केवल ओवरबर्डन के कारण रेत गाद से होने वाले पर्यावरण प्रदूषण को कम करने में मदद मिल रही है, बल्कि निर्माण के लिए सस्ती रेत प्राप्त करने का विकल्प भी मिल रहा है। कोयला सार्वजनिक उपक्रमों में रेत का उत्पादन पहले ही शुरू हो चुका है और अगले पांच वर्षों के दौरान कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल), नैवेली लिग्नाइट कॉरपोरेशन लिमिटेड (एनएलसीआईएल) और सिंगरेनी कोलियरीज कंपनी लिमिटेड (एससीसीएल) में रेत के उत्पादन को अधिकतम करने के लिए रोडमैप तैयार किया जा चुका है। कोयले का निष्कर्षण एक महत्वपूर्ण उप-उत्पाद के साथ होता है, जिसे ओवरबर्डन के नाम से जाना जाता है। कोयले के खुले खनन के दौरान, कोयले की परत के ऊपर स्थित परत को ओवरबर्डन के रूप में जाना जाता है, जिसमें प्रचुर मात्रा में सिलिका सामग्री के साथ मिट्टी, जलोढ़ रेत और बलुआ पत्थर शामिल होते हैं। नीचे से कोयला निकालने के लिए ओवरबर्डन को हटा दिया जाता है। बाद में, कोयला निष्कर्षण पूरा होने पर, भूमि को उसका मूल आकार प्रदान करने के लिए ओवरबर्डन का उपयोग बैकफिलिंग के लिए किया जाता है। ऊपर से ओवरबर्डन निकालते समय, मात्रा का स्वेल फैक्टर 20-25 प्रतिशत होता है। इस ओवरबर्डन को परंपरागत रूप से अपशिष्ट या बोझ माना जाता है और अक्सर इसके संभावित मूल्य को पहचाने बिना इसे ऐसे ही छोड़ दिया जाता है। हालांकि, सतत अभ्यास और सर्कुलर इकोनॉमी पर बढ़ते फोकस के साथ, ओवरबर्डन के लिए वैकल्पिक उपयोग की खोज करने और इसे कचरे से कंचन में बदलने की दिशा में बदलाव आया है।

प्रथम पहलः इस तरह के रूपांतरण की पहली व्यावसायिक

पहल सीआईएल की सहायक कंपनी वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (डब्ल्यूसीएल) ने 2016-17 के दौरान अपनी खदान में की थी। महाराष्ट्र के नागपुर जिले के भानेगांव खदान में एक पायलट प्रोजेक्ट शुरू किया गया था, जहां विभाग की ओर से स्थापित की गई मशीनों के जरिए रेत निकाली जाती थी। इस मशीन की क्षमता 300 घन मीटर प्रतिदिन थी। निकाली गई रेत का गहन परीक्षण किया गया और अंततः उसे नदी तल से मिलने वाली रेत से बेहतर पाया गया। इसकी कीमत लगभग 160 रुपये प्रति घन मीटर थी, जो बाजार की तत्कालीन कीमत का लगभग 10 प्रतिशत थी। यह रेत प्रधानमंत्री आवास योजना (पीएमएवाई) के तहत कम लागत वाले घर बनाने के लिए नागपुर इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट को दी गई थी। इसके अलावा दो और विभागीय पहल भी शुरू की गई। पायलट परियोजनाओं की सफलता पर डब्ल्यूसीएल ने नागपुर के पास गोंडेगांव खदान में देश के सबसे बड़े रेत उत्पादन संयंत्र को चालू करके रेत का व्यावसायिक उत्पादन शुरू किया। यह इकाई बाजार मूल्य से लगभग आधी कीमत पर प्रतिदिन 2500 घन मीटर रेत का उत्पादन करती है।

सरकारी इकाइयों के साथ साझेदारी और स्थानीय बिक्रीः नागपुर के सबसे बड़े रेत उत्पादक संयंत्र से उत्पादित रेत का बड़ा हिस्सा बाजार मूल्य के एक तिहाई पर एनएचएआई, एमओआईएल, महा जेनको जैसी सरकारी इकाइयों और अन्य छोटी इकाइयों को दिया जा रहा है। बाकी रेत को बाजार में खुली नीलामी के माध्यम से बेचा जा रहा है, जिससे स्थानीय लोगों को काफी सस्ती कीमत पर रेत मिल रही है।

कचरे से कंचन...आदर्श बदलावः ओवरबर्डन, जिसे कभी अपशिष्ट या बेकार पदार्थ समझा जाता था, अब उसे एक मूल्यवान संसाधन माना जा रहा है। रेत प्रसंस्करण इकाइयां भी जबरदस्त रोजगार के अवसर पैदा कर रही हैं, क्योंकि बड़ी संख्या में स्थानीय आबादी न केवल उत्पादन इकाई में, बल्कि ट्रकों के माध्यम से उपभोक्ताओं तक रेत को ले जाने के लिए उसकी लोडिंग और आपूर्ति जैसी कार्यों में शामिल हो रही है।

समाज पर प्रभावः इस सकारात्मक दृष्टिकोण और ओवरबर्डन के वैकल्पिक उपयोग की खोज के एक भाग के रूप में, सीआईएल ने देश के पूर्वी और मध्य भाग में अपनी सहायक कंपनियों में कई ओवरबर्डन प्रसंस्करण संयंत्र और रेत उत्पादन संयंत्र चालू किए हैं। इस स्थायी प्रयास के हिस्से के रूप में, कोयला सार्वजनिक उपक्रम में ओवरबर्डन से नौ रेत उत्पादन/ प्रसंस्करण संयंत्र पहले से ही उत्पादन में हैं, जिनमें से चार एससीसीएल में, तीन डब्ल्यूसीएल में और एक-एक एनसीएल और ईसीएल में हैं। इन रेत उत्पादन/ प्रसंस्करण संयंत्रों की कुल वार्षिक क्षमता लगभग 5.5 मिलियन क्यूबिक मीटर प्रति वर्ष है। इसके अलावा, सीआईएल की विभिन्न सहायक कंपनियों में ओवरबर्डन से रेत उत्पादक चार संयंत्र निविदा के विभिन्न चरणों में हैं। लिग्नाइट उत्पादक कंपनी एनएलसीआईएल भी दो रेत उत्पादक संयंत्र लगा रही है। इन सभी नए आगामी संयंत्रों की कुल वार्षिक रेत उत्पादन क्षमता लगभग 1.5 मिलियन क्यूबिक मीटर प्रति वर्ष होगी।

भविष्य का मार्गः अग्रणी पहलों के माध्यम से, कोयला/ लिग्नाइट सार्वजनिक उपक्रम रेत उत्पादन और खपत के लिए एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण का नेतृत्व कर रहे हैं, जो पर्यावरणीय स्थिरता और सामाजिक कल्याण में योगदान दे रहा है। कोयला मंत्रालय किफायती मूल्य पर ओवरबर्डन से और भी अधिक मात्रा में रेत का उत्पादन करने के लिए कोयला/ लिग्नाइट सार्वजनिक उपक्रम को लीक से हटकर इस पहल को शुरू करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। अगले कुछ वर्षों में, प्रौद्योगिकी की प्रगति और हमारे देश में विभिन्न स्थानों में भारी मात्रा में होने वाले रेत उत्पादन के साथ, रेत के प्रति घन मीटर कीमत में काफी कमी आएगी, जिससे आम आदमी को निर्माण उद्देश्य के लिए सस्ती रेत उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी। साथ ही इससे नदी तल की रेत के इस्तेमाल को भी कम करने में मदद मिलेगी, जो बदले में पर्यावरण के लिए भी फायदेमंद होगा।

(लेखक, वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड के पूर्व सीएमडी हैं।)

संपादकीय

निर्णय और नसीहत

सर्वोच्च अदालत ने सिर्फ 133 दिन बाद ही उस फैसले पर रोक लगा दी, जिसके कारण राहुल गांधी की सांसदी चली गई थी। अदालत ने कहा, जब तक राहुल गांधी की याचिका पर सुनवाई पूरी नहीं होती, तब तक दोष सिद्धि पर रोक रहेगी। अदालत ने ट्रायल कोर्ट से अधिकतम सजा देने का कारण भी पूछा। साथ ही कहा कि इस सजा के चलते सांसद की एक सीट खाली रह जाएगी जो एक शख्स के नहीं बल्कि मतदाताओं के अधिकार का मसला है। राहुल ने बेंगलुरू के कोलार में 2019 में चुनावी भाषण में मोदी सरनेम वालों को चोर कहा था। इस पर उनके खिलाफ शिकायत की गई थी और निचली अदालत ने दो साल की सजा सुनाई थी। सर्वोच्च अदालत ने कहा कि इसमें कोई शक नहीं कि भाषण में जो कुछ कहा गया, वह अच्छा नहीं था। राहुल इसका ध्यान रखें। जनता के बीच बोलते हुए नेताओं को सावधानी बरतने की बात भी की। इस फैसले से राहुल, उनके समथर्कों समेत उनकी पार्टी कांग्रेस ने राहत की सांस ली। सांसदी जाने के बाद से चल रही जुबानी व सोशल मीड़िया में छींटाकशी अभी भी जारी है। अंतिम फैसले के बाद स्पष्ट हो सकेगा कि वह अगला चुनाव भी लड़. सकते हैं। अब वह मौजूदा सत्र में शामिल होंगे और संसद सदस्य को मिलने वाला बंगला उन्हें पुनः मिल सकता है। अदालत ने मामले को राजनीतिक ना बनाने की हिदायत दी है। नेताओं के खिलाफ इस तरह की शिकायतें अक्सर विरोधियों द्वारा दर्ज कराई जाती हैं। मगर सबसे बड़ा विपक्षी दल और सबसे पुरानी पार्टी के जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधि के साथ हुए इस बर्ताव को राजनीति से ज्यादा जोड़ा गया। नेताओं को अपने भाषणों, सार्वजनिक बातचीत व बयानों में इन बातों का खास ख्याल रखना चाहिए। वे जनता के प्रतिनिधि ही नहीं होते, बल्कि समाज में मानक भी स्थापित करते चलते हैं। राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता के साथ व्यावहारिकता व नैतिकता का भी सम्मान किया जाना जरूरी है। इधर के कुछ सालों में राजनीति में आ रही गिरावट का यह छोटा सा नमूना है। जनता जनार्दन व समर्थकों को प्रभावित करने के लोभ में स्तरहीन बातें करने में नेता सकुचाते नहीं। यह फैसला उन तमाम राजनेताओं को सीख देने वाला साबित हो सकता है जो बयानबाजी व कटाक्ष करने के महारथी हैं। एक तो खिलाफ बोलने में शालीनता रखें, दूसरे विपक्ष को सबक सिखाने सरीखा ओछापन लाने से बाज आएं क्योंकि आने वाले वक्त में ये दोनों ही फैसले अपने तईं ऐतिहासिक साबित हो सकते हैं।

जनता की कमाई पर अधिकारियों की ऐश, कागजों पर आंकड़ों की जादूगरी

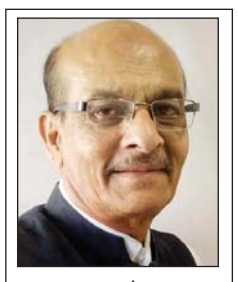

सनत जैन

भारत सरकार रूस से 90 लाख मैट्रिक टन गेहूं खरीदने जा रही है। रूस से गेहूं आयात का क्या कारण है। भारत रूस से गेहूं खरीदेगी तो उसे भुगतान भी करना होगा। भारत सरकार का आयात और निर्यात मे असंतुलन बहुत ज्यादा हो गया है। निर्यात कम है, आयात ज्यादा है। विदेशी मुद्रा का संकट भी बढ़ता जा रहा है। इसके बाद भी रूस से गेहूं जैसी वस्तु आयात की जा रही है। अभी तक हम गेहूं के निर्यात की बात करते थे। देश में सरकारी खरीद में जो अनाज उत्पन्न होता है। हर साल दो करोड़ 10 लाख मेट्रिक टन अनाज भंडारण की उचित व्यवस्था नहीं होने के कारण बर्बाद हो जाता है। बड़े-बड़े अधिकारी और कृषि मंत्रालय से जुड़े हुए अधिकारी कागजों पर गेहूं का रकबा घटाने और बढ़ाने का खेल कागजों में करते हैं। सरकारी खरीद के माध्यम से गेहूं और अन्य अनाजों का जो भंडारण किया जाता है। खरीदी के बाद उसका सही तरीके से भंडारण नहीं हो पाता है। खेतों में ही रखा रखा सड जाता है। गोदाम में भी गेहूं, चावल एवं अन्य अनाज सड़ने की शिकायत हर साल समाचार पत्रों में देखने को मिलती हैं। इसके बाद भी जनता के पैसे से, किसान के श्रम से,धरती मैया की कोख से जो अनाज उत्पन्न होता है। जो अनाज लाखों करोड़ों लोगों की भूख को शांत करता है। सरकार और उनके अधिकारी उसको सुरक्षित भी नहीं रख पाते हैं। अनाज खराब हो जाने पर उनके ऊपर कोई जिम्मेदारी भी नहीं आती है। जनता के पैसे से ऐश करने के लिए आयात और निर्यात का खेल पिछले दो दशक से भारत में बड़े पैमाने पर शुरू है। जब फसल आती है, उस समय उसका रखरखाव नहीं किया जाता है। करोड़ों टन अनाज बर्बाद हो जाता है। उसके बाद आयात और निर्यात का खेल कर बड़े पैमाने पर अवैध कमाई करने का धंधा जोरों पर है। अधिकारियों की लापरवाही और गैर जिम्मेदारी से लाखों टन अनाज, सुरक्षित तरीके से भंडारण नहीं करने पर सड़ जाता है। सड़ता कम है, जानबूझकर सड़ाया जाता है? अनाज सड़ा हुआ बताकर करोड़ों अरबों रुपए का वारा न्यारा, इस प्रक्रिया से जुड़े हुए अधिकारी और कर्मचारियों द्वारा किया जाता है। हर साल नए नए तरीके के आंकड़े आ जाते हैं। अधिकारी अपनी सुविधा के अनुसार ऑफिस में बैठकर कागजों पर आंकड़ों की खेती कर लेते हैं। सरकार भी उन आंकड़ों के आधार पर निर्णय करती है। हाल ही में रूस से गेहूं आयात का जो निर्णय सरकार ने लिया है। वह चौंकाने वाला निर्णय है। पहले सरकार गेहूं का निर्यात करती है। बाद में आयात करती है। भारत में इतने वर्षों के बाद भी अनाज, फल, सब्जी, तिलहन, दलहन के भंडारण की व्यवस्था अच्छी हो। इसकी तरफ अधिकारियों और सरकार का ध्यान नहीं होता है। एक ओर वेयरहाउस खाली पड़े रहते हैं। खुले में भंडारण किया जाता है। जानबूझकर अनाज और खाद्यान्न को सड़ाकर धरती मैया और धरती पुत्रों का अपमान करने की यह परम्परा खत्म होने का नाम नहीं ले रही है। सरकार के आंकड़ों की जादूगरी भी इस फजीर्वाड़े में बड़ा योगदान है। सरकारी आंकड़ों में 2022 का गेहूं का उत्पादन 107.7 मिलियन मेट्रिक टन था। जो इस वर्ष बढ़कर 112.7 मिलियन मेट्रिक टन हो गया। विदेशी न्यूज एजेंसी रायटर्स का दावा है, कि वास्तविक उत्पादन सरकारी अनुमान से 10 फीसदी कम हुआ है। जिसके कारण भारत सरकार को गेहूं का आयात करना पड़ रहा है। राइटर्स के अनुसार भारत को जितने गेहूं की आवश्यकता भारत की आंतरिक जरूरत के लिए है। भंडारण में भारत के पास गेहूं का भंडारण जरूरत के अनुसार ही है। गेहूं का रिजर्व भंडार पहले की तुलना में बहुत कम हो गया है। जिसके कारण भारत सरकार की चिंता बढ़ गई है। सरकारी अनुमान के अनुसार वर्ष 2023-24 में 330 मिलियन मेट्रिक टन खाद्यान का उत्पादन होगा। भारत की सकल भंडारण क्षमता मात्र 44 फीसदी है। खाद्यान्न में सरकारी आंकड़ों की जो जादूगरी हो रही है। जो अव्यवस्था जानबूझकर बनाई गई है। उसका सारा भार आखिरकार जनता के ऊपर ही पड़ रहा है। एक ओर किसानों से अनाज की खरीदी न्यूनतम समर्थन मूल्य पर सरकार शत-प्रतिशत नहीं करती है। किसानों के पास भंडारण का कोई इंतजाम नहीं होता है। उत्पादन लागत से कम कीमत में किसान अपनी फसल बेचने के लिए विवश होता है। जैसे ही फसल बाजार में बिक जाती है। उसके बाद दाम बढ़ने शुरू हो जाते हैं। जून माह में भारत की मंडियों में गेहूं का औसत थोक दाम रुपये 2663 रुपये प्रति क्विंटल था। जो अब बढ़कर 3000 से 4000 रुपये प्रति क्विंटल पर पहुंच गया है। सरकार द्वारा खाद्यान्न भंडारण की पर्याप्त क्षमता होने के दावे, बड़े जोर शोर से किए जाते हैं। किंतु इसके बाद भी हर साल लाखों टन अनाज खेत और भंडारण के दौरान खराब हो जाने के समाचार सुर्खियों में रहते हैं। समय-समय पर इसमें स्टॉक की गड़बड़ी कर भारी भ्रष्टाचार करने के समाचार भी बड़े आम हैं। आंकड़ों की जादूगरी करके एक और भ्रष्ट अधिकारी और शासन तंत्र से जुड़े हुए लोग अरबों-खरबों रुपए का हर साल भ्रष्टाचार करते हैं। वहीं जनता को दोनों तरफ से लूटा जाता है। सरकारी खजाने से जो राशि खर्च होती है। उसका भार भी जनता पर आता है। खराब भंडारण के कारण जो नुकसान होता है। उसका भी खामियाजा आम जनता को ही भुगतना पड़ता है। हम अपने देश में उत्पादित खाद्यान्न को यदि सुरक्षित नहीं रख पा रहे हैं। यह सरकार की सबसे बड़ी भूल और असफलता मानी जानी चाहिए। यदि हम अनाज से 139 करोड़ जनसंख्या का पेट नहीं भर पाएंगे। तो अन्य कोई भी विकास हमारे किसी काम का नहीं होगा। यह सरकार को ध्यान में रखना होगा।

रेलवे : बे-पटरी होती व्यवस्था

सुशील देव

होली-दिवाली है तो गांव जाएंगे। छठ है तो गांव जाएंगे ही। शादी-ब्याह, मरनी-हरनी में भला जाना कैसे रुक सकता है? सगे-संबंधियों या दोस्तों के घरेलू समारोहों में भी कई बार शिरकत करने के लिए गांव जाना पड़ता है। हारी-बीमारी की बात ही अलग है।' इन हालात में उत्तर प्रदेश और बिहार की ट्रेनों में जबर्दस्त भीड़ क्यों होती है! कभी सोचा है आपने? हमें लगता है, वहां के लोग हर मौके पर शामिल होने की कोशिश करते हैं। इसलिए यात्रा के संघर्ष की परवाह नहीं करते। खर्च से भी पीछे नहीं हटते। दिवाली-छठ अभी चार महीने दूर हैं, लेकिन उनकी सारी सीटें फुल हो चुकी हैं। वैसे तो बिहार की किसी भी ट्रेन में हमेशा ही टिकटों का टोटा रहता है।

घनी आबादी वाले इन दोनों राज्यों के ज्यादातर लोग दिल्ली, मुंबई, कोलकाता जैसे मेट्रो शहरों में नौकरी करने जाते हैं, और विभिन्न अवसरों पर अपने गांव जाना भी नहीं भूलते। शायद एक वजह यह भी है कि यूपी-बिहार की ट्रेनों में इतनी जबरदस्त भीड़ देखी जाती है। कोरोना काल में इसकी मिसाल आप देख ही चुके हैं। अच्छी बात यह है कि इन राज्यों के रूटों से रेलवे की आमदनी कम नहीं होती लेकिन आप किसी भी समय, किसी भी सीजन में ट्रेन की टिकट लेते हैं, तो आपको अक्सर वेटिंग लिस्ट का सामना करना पड़ता है। यूपी-बिहार की ट्रेनों से इतनी कमाई होने के बावजूद रेलवे के नुमाइंदे महज यह कह कर पल्ला झाड़ लेते हैं कि भीड़ की वजह से व्यवस्थाएं दुरुस्त नहीं रह पातीं। यह जवाब उतना ही गैर-जवाबदेह लगता है जितना किसी अच्छी चलती हुई मिठाई की दुकान से पूरे पैसे देने के बावजूद आपको घटिया मिठाई खाने को मिल जाती है। देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करते हुए रेल महकमे को इस पर गंभीरतापूर्वक सोचने की जरूरत है।

लोग उदाहरण देते हैं कि साउथ इंडिया में ऐसा नहीं है। आखिर, वजह क्या है? क्या वहां का प्रशासन सख्त हो जाता है, या वहां के लोगों की नैतिकता इतनी मजबूत है कि वे किसी की सीट पर बैठते नहीं हैं। यहां भीड़-भाड़ का मसला है, तो नॉर्थ इंडिया में ट्रेनें ज्यादा क्यों नहीं हैं, उसके फेरे क्यों नहीं बढ़ाए जाते? सरकार इस तरह की योजना क्यों नहीं बनाती कि भीड़ कम हो सके। दैनिक यात्री या एमएसटी पासधारकों की अलग व्यवस्था का सख्ती से पालन क्यों नहीं किया जाता? आज ट्रेनों में भीड़, बोगी के भीतर अव्यवस्था, प्लेटफार्म पर अराजकता, रेल व्यवस्था या प्रबंधन पर कई सवाल उठते रहते हैं। आये दिन फोटो, वीडियो, अखबारों और टेलीविजन के अलावा सोशल मीडिया पर वायरल होते रहते हैं, जिसे दोहराना उचित नहीं। मगर यह सच है कि सुपरफास्ट ट्रेनों में भी इन रूटों पर किसी कायदे-कानूनों का पालन नहीं किया जाता। गरीब एवं निम्न मध्यमवर्गीय यात्रियों के लिए बने स्लीपर क्लास की हालत जनरल बोगी से भी बदतर हैं। उनमें इतनी अधिक भीड़ हो जाती है कि रिजर्व सीट का कोई मतलब नहीं रह जाता। रात को यदि आप लेटना भी चाहें तो आराम से लेट नहीं सकते। आपके सिर से पैर तक किसी भी बर्थ पर यात्री जबरदस्ती बैठते हैं। पैर रखने की तक की जगह नहीं होती। फर्श पर औरत-मर्द और बच्चे रातों को बिछ जाते हैं। नतीजतन, आप टॉयलेट तक नहीं जा पाते। 2009 में अमृतसर जा रही एक ट्रेन में एक यात्री देवकांत भीड़ की वजह से अपनी बोगी के बाथरूम तक नहीं जा पाए थे, जिसके कारण उन्हें बहुत दिक्कत आई। शिकायत के बाद रेलवे को उन्हें हजार्ना देना पड़ा था।

यदि आप किसी तरह बाथरूम तक पहुंच भी जाते हैं तो उसकी गंदगी और बदबू आपको नर्क की याद दिला देगी। गर्मी का मौसम हो तो आपकी सांसें भी अटक सकती हैं। स्लीपर बोगी में अक्सर भीड़ इतनी अधिक हो जाती है कि लोग खिड़कियों से घुसने लगते हैं। यात्री बच्चों को लगेज की तरह फेंकने लगते हैं। बूढ़े-बुजुर्गों और महिलाओं को भी उसी खिड़की से ठूस दिया जाता है। इस वजह से कई यात्री बेहोश हो जाते हैं। थर्ड एसी में भी अब कोई राहत नहीं। उसमें भी दबंग और जुगाड़ु किस्म के यात्री घुस जाते हैं, और सीट पर बैठे यात्रियों की परेशानी बढ़ा देते हैं। दुख इस बात का है कि इन व्यवस्थाओं को दुरुस्त करने के लिए पूरी ट्रेन में अनमने ढंग से कभी-कभार कोई टीटी या सुरक्षाकर्मी नजर आते हैं, जो इन असुविधाओं को नजरअंदाज करते हुए चले जाते हैं। शिकायतों पर कुछ कार्रवाई जरूर होती है, मगर कौन इस पचड़े में पड़े, यह सिरदर्दी मोल ले, यह सोचकर, अक्सर सफर के दौरान भला परिवार विरोध करने की जहमत नहीं उठाते। जाहिर है भीड़, भेड़ियाधसान बन जाता है, जो कभी-कभी बड़ा संकट भी खड़ा कर देता है। मगर रेलवे के कानों तक जूं नहीं रेंगती। अच्छी कमाई के बावजूद रेलवे ग्राहकों के लिए उचित सुविधाएं नहीं दे पा रही है। कसूरवार कौन है? देश को समझना होगा।

चिंतन-मनन

ज्ञान से सफलता अर्जित

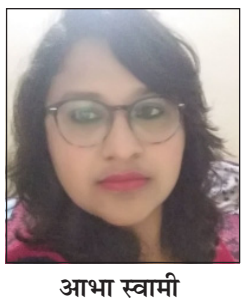

आभा स्वामी

आज के वर्तमान युग में जिस व्यक्ति के पास ज्ञान है व सफल माना जाता है। ज्ञान के बिना जीवन व्यर्थ है। ज्ञान का अर्थ ही जानना या सीखने से होता है। ज्ञान अपनी बौद्धिक विकास, अपने सक्षम के हिसाब से अर्जित करता है। स्वयं पर निर्भर करता है की कैसे किस तरह अर्जित करना है। हर किसी के पास हर तरह का ज्ञान होना आवश्यक है। अगर आप कहीं जाते है आपको चीज़ का ज्ञान है तो आपको किसी प्रकार से परेशानी नही आयेगी, ज्ञान नहीं तो आप असमंजस में पढ़ जायेंगे की ज़्या कैसे किस तरह करना है वही आपको ज्ञान होगा तो स्वयं में अलग सा आत्मविश्वास होगा, संकोच नहीं करेंगे। आज के युग में सीखने का सबसे अच्छा श्रोत है पढ़ना जिसमें श्रेष्ठ से श्रेष्ठ बन जाता है निरंतर अभ्यास से व्यक्ति ज्ञान मैं सुधार कर है। माता-पिता अपने बच्चों को शुरआती समय से ज्ञान प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बच्चे की शिक्षा घर पर शुरू होती है और उनके माता-पिता उनके पहले शिक्षक होते हैं माता-पिता के बाद, शिक्षक एक बच्चे की सीखने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं उनके लिए यह समझना आवश्यक है। स्वयं में ज्ञान की कमी है तो हमें संकोच नहीं करना चाहिए। संकोच से व्यक्ति में सुधार से व्यक्ति सफल नहीं हो सकता है ज्ञान निरंतर मिलता है हर जगह हमारे आस पास खुद पर निर्भर करता है हम ज्ञान को कब कैसे अर्जित करें। ज्ञान अर्जित करने की ना उमर, वक्त, क्षण, ना समय की कोई सीमा होती है एक व्यक्ति जब चाहे बिना किसी संकोच के ज्ञान को अर्जित कर सकता है। ज्ञान आपको सफल भविष्य की और अग्रसर कर सकता है। आप एक से अधिक व्यक्ति को बांट सकते है आप अपनी बुद्धि, कोशल, विकास से अपना भविष्य उज्ज्वल बना सकते है। अगर आपको अपने आपको सफल, योग्य, सक्षम बनाना है तो निरंतर पढ़े, खोजे नए नए कार्य करें, नई नई योजनाएं बनाएं दिन प्रतिदिन किताबे पढ़े, जिस से आपका ज्ञानवर्धक बनें।

रेलवे ट्रैक पर अचेत अवस्था में मिली बालिका, दुष्कर्म की आशंका, जांच जारी

चंदौली (संवाददाता)। अलीनगर थाना क्षेत्र के हापुड़ कॉलोनी में रेलवे ट्रैक पर सोमवार की सुबह एक बालिका अचेतावस्था में मिली। मौके पर पहुंचे परिजनों ने पुलिस को इसकी सूचना दी। सूचना पर पहुंची पुलिस बालिका का इलाज के लिए नगर स्थित राजकीय महिला चिकित्सालय में भर्ती कराया है। जहां एएसपी विनय सिंह, सीओ अनिरूद्ध सिंह सहित पुलिस के अधिकारी पहुंचे।

अलीनगर थाना क्षेत्र के हापुड़ कॉलोनी में सोमवार की सुबह रेलवे ट्रैक पर एक बालिका अचेतावस्था में मिली। बालिका से दुष्कर्म की आशंका है। मौके पर पहुंची पुलिस ने उसे इलाज के लिए राजकीय महिला चिकित्सालय, पीडीडीयू नगर में भर्ती कराया है। बताया जा रहा है कि बालिका सुबह शौच के लिए रेलवे ट्रैक के पास गई थी।

अलीनगर थाना क्षेत्र के हापुड़ कॉलोनी में रेलवे ट्रैक पर सोमवार की सुबह एक बालिका अचेतावस्था में मिली। मौके पर पहुंचे परिजनों ने पुलिस को इसकी सूचना दी। सूचना पर पहुंची पुलिस बालिका का इलाज के लिए नगर स्थित राजकीय महिला चिकित्सालय में भर्ती कराया है। जहां एएसपी विनय सिंह, सीओ अनिरूद्ध सिंह सहित पुलिस के अधिकारी पहुंचे। मामले की जांच की जा रही है। बालिका के परिजनों ने बताया कि वे अस्थायी तौर पर कॉलोनी के पास ही रह रहे थे। बालिका सुबह शौच के लिए गई। इसके बाद वह रेलवे ट्रैक पर मिली। उसे चलने में दिक्कत हो रही है। सीओ अनिरुद्ध सिंह ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है।

चंदौली के एएसपी विनय सिंह ने कहा कि, थाना अलीनगर अन्तर्गत लोको कालोनी रेलवे ट्रैक के पास सुबह नाबालिग लड़की के साथ अज्ञात युवक द्वारा दुष्कर्म किए जाने के प्रयास की सूचना प्राप्त हुई। तत्काल उच्चाधिकारगण पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंच पीड़िता को महिला चिकित्सालय पीडीडीयू नगर ले जाया गया जहां चिकित्सीय परीक्षण चल रहा व लड़की की हालत सामान्य है। अन्य आवश्यक विधिक कार्रवाई प्रचलित।

सरयू नदी के जलस्तर में फिर तेजी, तटवर्ती इलाकों में लोग सहमे

दोहरीघाट (संवाददाता)। लगातार पांच दिन से सरयू नदी के जलस्तर में घटाव के बाद रविवार से उफान आया। नगर सहित तटवर्ती इलाकों के लोगों में कटान का भय सता रहा है। दिलों की धड़कनें तेज हो गई हैं। 24 घंटे में नदी के जलस्तर में 30 सेमी की वृद्धि दर्ज की गई। नदी के उग्र रूप धारण करने से कस्बे सहित ऐतिहासिक धरोहरों का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। एकाएक नदी के बढ़ने से इसके किनारे स्थित भारत माता मंदिर, खाकी बाबा की कुटी, दुर्गा मंदिर, डीह बाबा मंदिर, हनुमान मंदिर सहित विभिन्न ऐतिहासिक धरोहरों पर खतरा मंडराने लगा है। तटवर्ती इलाकों धनौली रामपुर, कोरौली, बेलौली, महुआ बारी, रसूलपुर, सूरजपुर सहित विभिन्न इलाकों में पानी घुसने की आशंका लोगों को सता रही है।

न्यूज सार

आठ अगस्त को निजी स्कूल बंद कर विरोध जताएंगे प्रबंधक

पीडीडीयू नगर (संवाददाता)। आजमगढ़ के निजी स्कूल में छठीं कक्षा की छात्रा की आत्महत्या करने के मामले में पुलिस की कार्रवाई के विरोध में निजी स्कूल के प्रबंधक आठ अगस्त को स्कूल बंद रखेंगे। इस दिन स्कूल प्रबंधन की ओर से जागरूकता दिवस मनाया जाएगा। शिक्षक और कर्मचारी बांह पर काली पट्टी बांध कर विरोध जताएंगे। यह निर्णय बाल विद्यालय सीनियर सेकेंडरी स्कूल, डुमरी में शिक्षकों की बैठक में लिया गया। बैठक में पूर्वांचल स्कूल वेलफेयर एसोसिएशन के संयुक्त सचिव प्रथम मुकुल पांडेय ने कहा कि पिछले दिनों आजमगढ़ के स्कूल में हुई घटना दुर्भाग्यपूर्ण है। प्रदेश का समूचा शिक्षा जगत इससे आहत है। इस मामले में पुलिस प्रशासन की कार्रवाई भी निंदनीय है। पुलिस ने बिना उचित जांच पड़ताल या ठोस सबूत के विद्यालय के शिक्षक एवं प्रधानाचार्या को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। यह अविवेकपूर्ण और गैर तर्कसंगत कार्रवाई है। ऐसे में स्कूल वेलफेयर एसोसिएशन ने यह निर्णय लिया है कि आठ अगस्त को स्कूलों को बंद रखा जाएगा। इस दिन शिक्षक स्कूल पहुंचेंगे और मौन सभा कर छात्रा की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करेंगे। प्रदेश भर के सभी विद्यालयों की ओर से मुख्यमंत्री को पत्रक भेजा जाएगा। इसके माध्यम से विभिन्न बिंदुओं पर स्कूलों में कौन कौन सी वस्तु स्कूल में लाने पर प्रतिबंधित रहेगा।

किसान न्याय मोर्चा ने मार्ग चौड़ीकरण के विरोध में दिया धरना

चंदौली (संवाददाता)। किसान न्याय मोर्चा ने चंदौली सैदपुर मार्ग के चौडीघ्करण के दौरान मकानों को तोड़ने के विरोध में फगुइया गांव में धरना प्रदर्शन किया। इस दौरान किसानों ने आंदोलन की चेतावनी दी। किसान न्याय मोर्चा के प्रदेश संयोजक महेंद्र प्रसाद ने कहा कि पीडब्ल्यूडी के अधिकारियों ने बताया है कि सड़क चौड़ीकरण में 1428 किसान प्रभावित हैं। यह बहुत ही हास्यास्पद बयान है। बिना वर्गीकरण किए कितने भूमिहीन घर से हैं और कितने मकान मालिक हैं और कितने किसान हैं, इस तरह का बयान दिया जा रहा है। कहा कि लोगों को बिना नोटिस दिए पूरा सड़क पर मकान तोड़ने के लिए माइक लगाकर चेतावनी दी जा रही है। कहा कि जिला प्रशासन इस पर रोक लगाए। कहा कि बारिश का मौसम है। इस बरसात में किसी के मकान ना तोड़े जाएं जब तक उनका पूरा प्रतिकार पुनर्वास व भूमि के बदले भूमि ना दे दिया जाए मकान न तोड़ा जाए। यदि यह बात ना मानी गई तो किसान न्याय मोर्चा जिला अधिकारी का घेराव करेगा। बैठक में किसान न्याय मोर्चा के उपाध्यक्ष शमीम मिल्की, इंद्रजीत शर्मा, धर्मदेव कुशवाहा, मुन्नू यादव, सुशील यादव, रोहित यदुवंशी, इरावती देवी, बमबम विश्वकर्मा आदि उपस्थित रहे।

एक दिन में ढाई मीटर तक बढ़ा गंगा का जलस्तर

चहनियां पीडीडीयू नगर (संवाददाता)। लगभग एक सप्ताह के ठहराव के बाद गंगा के जल स्तर में तेजी से बढ़ोत्तरी होने लगी है। चौबीस घंटे में गंगा का जलस्तर ढाई मीटर तक बढ़ गया है। बलुआ गंगा घाट पर शवदाह स्थल तक पानी पहुंच गया है। केंद्रीय जल आयोग के अनुसार गंगा में दस सेमी प्रतिघंटे की रफ्तार से जल स्तर बढ़ रहा है। पानी का बढ़ाव देख तटवर्ती इलाके के लोग सहमे हैं। लोगों का कहना है कि इतनी तेजी से पानी का बढ़ाव जारी रहा तो जल्द ही गंगा खतरे के निशान तक पहुंच जाएगी। उत्तर भारत में हो रही तेज बारिश का असर गंगा के जलस्तर पर दिख रहा है। जुलाई माह के अंतिम सप्ताह में गंगा बढ़ने लगी थी लेकिन 29 जुलाई को जलस्तर का बढ़ाव थम गया था। एक बार फिर मानसून सक्रिय हुआ और बारिश होने से गंगा के जलस्तर में बढ़ोत्तरी दिख रही है। शनिवार से बढ़ोत्तरी शुरू हुई जो रविवार को भी जारी रही। बलुआ गंगा घाट पर पिछले चौबीस घंटे में चेंजिंग रूम पानी में डूब गया। वहीं शवदाह स्थल तक पानी पहुंच गया है। कुल मिलकार ढाई मीटर तक पानी बढ़ा है। वहीं केंद्रीय जल आयोग की बाढ़ बुलेटिन के अनुसार रविवार की शाम छह बजे बजे गंगा का जलस्तर 67.22 मीटर था।

खुश्की बैनामा के ६४ प्रकरणों में पकड़ी गई स्टांप चोरी, नोटिस जारी

मऊ (संवाददाता)। जिले में खुश्की बैनामों में स्टांप शुल्क की देयता की जांच की जा रही है। अब तक कुल 64 प्रकरणों में 1 करोड़ 4 लाख 30 हजार 710 रुपये के स्टांप शुल्क की चोरी का मामला संज्ञान में आया है। सभी 64 प्रकरणों में संबंधित लोगों को नोटिस जारी करते हुए वाद दायर किया जा चुका है।खुश्की बैनामा में स्टांप शुल्क की चोरी का मामला संज्ञान में आने पर जिलाधिकारी ने समस्त खुश्की बैनामों की जांच करने तथा स्टांप शुल्क की चोरी के खिलाफ वाद दायर कर स्टांप शुल्क की वसूली का निर्देश दिया था। खुश्की बैनामों के जांच हेतु जिलाधिकारी ने प्रशिक्षु आईपीएस अरुण कुमार के नेतृत्व में 4 सदस्यीय टीम का गठन किया था, जिसमें एआईजी स्टांप, अधिशासी अधिकारी नगर पालिका परिषद तथा तहसीलदार सदर सम्मिलित हैं। इस मामले में एआईजी स्टांप राकेश कुमार ने बताया कि अभी भी समस्त संदेहास्पद फाइलों की जांच की जा रही है, जिससे खुश्की बैनामों में और भी स्टांप चोरी का मामला संज्ञान में आने की संभावना है।

चंदौली मझवार स्टेशन संवरेंगा, हुआ शिलान्यास

चंदौली (संवाददाता)। जिला मुख्यालय पर स्थित चंदौली मझवार रेलवे स्टेशन की सूरत 21.70 करोड़ से संवरेगी। रविवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्चुअल तरीके से इसका शिलान्यास किया। पं. दीनदयाल उपाध्याय रेल मंडल के गया, अनुग्रह नारायण रोड, सासाराम, भभुआ रोड, कुदरा, दुर्गावती का विकास किया जाएगा। चंदौली में आयोजित समारोह में भारी उद्योग मंत्री डॉ. महेन्द्रनाथ पांडेय ने भी शिलापट्ट का अनावरण किया। शिलान्यास कार्यक्रम की शुरूआत सुबह नौ बजे से ही हो गई थी। अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत स्टेशनों पर यात्रियों की सुविधाओं के विकास की जानकारी दी गई। बताया गया कि स्टेशन भवन, प्रवेश एवं निकास द्वार, फुटओवर ब्रिज, कॉनकोर्स, प्लेटफॉर्म, सर्कुलेटिंग एरिया, पार्किंग, दिव्यांगों के लिए रैंप, प्रकाश, बैठने व पेयजल व्यवस्था, पहुंच पथ, संकेत एवं निर्देश बोर्ड, ट्रेन डिस्प्ले और उद्घोषणा प्रणाली आदि के कार्य कराए जाएंगे। चंदौली मझवार स्टेशन के विकास पर 21.70 करोड़ रुपये खर्च होंगे। प्रधानमंत्री ने अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत वर्चुअल माध्यम से देश भर के 508 रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास का शिलान्यास दिन में 11 बजकर 18 मिनट पर किया।

किसानों के चेहरे खिले, शहरी कीचड़ और फिसलन से मिले

गाजीपुर (संवाददाता)। जिले में रविवार को कहीं रिमझिम तो कहीं अच्छी बारिश हुई। इससे जहां लोगों को उमस से राहत मिली, वहीं किसानों के चेहरे खिल उठे। हालांकि शहरी इलाके में जल निकासी की व्यवस्था नहीं होने से जहां–तहां जलभराव की स्थिति बनी रही। जुलाई माह में पर्याप्त बारिश नहीं होने से जहां उमस से लोग परेशान थे। वहीं कृषि कार्य प्रभावित हो रहा था। किसी तरह किसान नहर और ट्यूबवेल से सिंचाई कर रहे हैं।

अगस्त माह में मौसम ने कुछ रूख बदला और नम हुआ। दो–तीन दिनों से कई क्षेत्र में छिटपुट बारिश हो रही है। वहीं रविवार को शहर सहित आसपास के क्षेत्र में रिमझिम बारिश से लोगों को काफी राहत मिली। जमानियारू क्षेत्र में लगातार हो रही बारिश की वजह से नगर की सड़कों पर जलजमाव की स्थिति बन गई है। जिससे राहगीरों से स्थानीय लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। बारिश का मौसम आते ही पानी निकासी न होने से नगर बेहाल हो जाता है। नगर के कस्बा बाजार सहित स्टेशन बाजार में बारिश एवं नालियों साफ सफाई न होने की वजह से जगह–जगह नालियां ओवरफ्लो हो रही हैं। नाली का गंदा पानी सड़क पर बह रहा है। जिससे होकर राहगीर गुजरने के लिए बाध्य है। कहने के लिए नगर पालिका में सफाई कर्मियों की भरमार है। लेकिन साफ–सफाई की व्यवस्था भगवान भरोसे से ही चल रही है। नगर के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, डाकघर, पशु अस्पताल, कस्बा बाजार, स्टेशन बाजार सहित मुख्य सड़कों पर जलभराव होता है। बावजूद इसके नगर पालिका प्रशासन इसकी सुध नहीं ले रहा है। इस संबंध में अधिशासी अधिकारी अखिलेश तिवारी ने बताया कि नगर पालिका क्षेत्र में लगातार साफ–सफाई की जा रही है। यदि कहीं शिकायत पाई जाती है, तो निश्चित सफाई कर्मी के विरोध कार्रवाई की जाएगी।

नंदगंजरू स्थानीय बाजार सहित आसपास के क्षेत्र में रविवार को हुई बारिश से अस्पताल गेट पर पानी जमा हो गया है। आने वाले मरीजों को पानी में आना पड़ रहा है। करीब एक घंटे तेज बारिश होने से बाजार में पानी जमा हो गया। वही अस्पताल गेट पर पानी लगने से मरीजों को आने जाने में परेशानी का सामना करना पड़ा। लोगों ने मांग की है कि अस्पताल गेट के पास मिट्टी और गिट्टी डालकर उसे ऊंचा किया जाए। पीजी कॉलेज स्थित कृषि विज्ञान केंद्र कृषि वैज्ञानिक कपिल देव शर्मा ने बताया कि आगामी पांच दिनों के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार घने बादल छाए रहने की संभावना के साथ हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है। अधिकतम तापमान 26 से 33 डिग्री सेंटीग्रेड और न्यूनतम तापमान 21 से 24 डिग्री सेंटीग्रेड के बीच रहने की संभावना है। पश्चमी हवा औसत 18 से 20 किलोमीटर प्रति घंटा से चलने की उम्मीद है।

कृषि वैज्ञानिक कपिल देव शर्मा ने बताया कि किसान पिछली माह बोई गई सब्जियों की निगरानी करें। किसान निराई–गुड़ाई करें लाही, सफेद मक्खी और चूसक कीटों की निगरानी करें।

सिंचाई और बिजली आपूर्ति की हालत सुधारें : डॉ. महेंद्रनाथ पांडेय

चंदौली (संवाददाता)। केंद्रीय भारी उद्योग मंत्री डॉ. महेंद्रनाथ पांडेय ने बिजली और सिंचाई विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे सिंचाई और बिजली आपूर्ति व्यवस्था दुरुस्त करें। इसमें लापरवाही नहीं चलेगी। शनिवार की देर रात विकास भवन सभागार में बिजली और सिंचाई विभाग के अधिकारियों की बैठक में बोल रहे थे। केंद्रीय मंत्री ने सिंचाई विभाग के अधिकारियों से पूछा कि खेतों तक पानी पहुंचाने में प्रमुख कठिनाई क्या हैं। उसके समाधान की क्या योजना बनाई गई है। अधिकारी कोई उत्तर नहीं दे सके। अधिशासी अभियंता चंद्रप्रभा की कार्यशैली पर असंतोष जताते हुए कहा कि सोमवार तक ट्यूबवेल को एनओसी नहीं दिया गया तो कड़ी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि जिले की सिंचाई से संबंधित समस्याओं को चिह्नित करके उसके समाधान की तात्कालिक और दीर्घकालिक कार्ययोजना तैयार करके तीन दिन के भीतर जिलाधिकारी को मुहैया कराएं। योजना की जानकारी किसानों को भी दें। उन्होंने कहा कि उन्होंने सिंचाई समस्याओं को लेकर नोडल अफसर तैनात किए जाएं और उसकी जानकारी भी किसान और जनता को दी जाए। विधायक सुशील सिंह ने कहा कि रोस्टर के अनुसार नहरों में पानी नहीं छोड़ा जा रहा है। इसके साथ उन्होंने विद्युत विभाग के अधिकारियों पर विद्युत की कम आपूर्ति को लेकर नाराजगी जाहिर की। जिलाधिकारी निखिल टीकाराम फुंडे ने बताया कि खरीफ गोष्ठी के दौरान नहरों का रोस्टर बनाया गया है। उस रोस्टर से जनप्रतिनिधियों को अवगत कराएं और सिंचाई व विद्युत विभाग के अधिकारी समन्वय से काम करें। बैठक में विधायक कैलाश आचार्य, जिला अध्यक्ष अभिमन्यु सिंह, सांसद प्रतिनिधि सर्वेश कुशवाहा, राणा सिंह आदि उपस्थित रहे। प्रदेश के जल शक्ति मंत्री स्वतंत्रदेव सिंह के निर्देश पर रविवार को 30 पंप कैनालों पर चलो नहर की टेल के तहत चौपाल का आयोजन किया गया। किसानों से संवाद कर विभाग के अधिकारियों ने उनकी समस्या सुनीं और समाधान का आश्वासन दिया। धानापुर की नगवां पंप कैनाल पर सैयदराजा विधायक सुशील सिंह व नलकूप विभाग के मुख्य अभियंता चेतन कुमार माहेश्वरी सुनवाई गई। विधायक ने अधिकारियों से कहा कि किसानों की सिंचाई की समस्या का जल्द समाधान कराएं। लघु डाल विभाग के अधिशासी अभियंता बृजेश कुमार ने बताया कि जिले के नौबतपुर, करौती, चारी, रेरूआ, धनाईतपुर, अरंगी, अदसढ़, ककरैत, मुड्डा, कोनिया, हलुआ, भूसी, मूसी, बैरा पूर्वी व बैरा दस, कौडिहार, नेवाजगंज पूर्वी व नेवाजगंज, वनभीषमपुर, वीरासराय, गुरैनी, सुदाव, बलुआ, नगवा, कुंडाकला, मिल्कीपुर, सोगाई, कोटीघाट, महदेउर, धानकुबौरी गांव में चौपाल का आयोजन किया गया।

49 सेकेंड में बता दिया कितना शानदार होगा अपना दिलदारनगर स्टेशन

गाजीपुर (संवाददाता)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली से वर्चुअली 508 रेलवे स्टेशनों का रविवार को शिलान्यास किया। इसमें जिले से दिलदारनगर रेलवे जंक्शन भी शामिल रहा। इस दौरान दिखाए गए 49 सेकेंड के वीडियो ने बता दिया कि दिलदारनगर रेलवे जंक्शन काम पूरा होने के बाद कितना शानदार होगा। वीडियो में नये भारत के नये रेलवे स्टेशन की झलक दिखी।

आगामी 50 वर्ष की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए 21.16 करोड़ रुपये की लागत से प्रस्तावित पुनर्विकास कार्य की डिजाइन देख लोगों का चेहरा खिल उठा। यह सपना पूरा होने जैसा है...ये बात कई लोगों की जुबान से बरबस निकल गई। इससे न सिर्फ स्टेशन बल्कि साथ–साथ आसपास के कई क्षेत्रों का भी विकास होगा ।

गाजीपुरधदिलदारनगर। प्रधानमंत्री मोदी के संबोधन का रविवार को सीधा प्रसारण एलईडी टीवी के जरिए किया गया। इसके लिए स्थानीय स्तर पर रेलवे पार्क में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद सकलदीप राजभर ने शिलापट्ट का अनावरण करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री ने जिस तरह से आज इतने बड़े पैमाने पर स्टेशनों के पुनर्निर्माण के लिए शिलान्यास किया किया है, इसके पूरा हो जाने के बाद आवागमन की सुविधा बढ़ेगी। इसका सीधा लाभ आमजन व यात्रियों सहित अन्य को मिलेगा। साथ ही इससे स्थानीय क्षेत्र में इसके चलते विकास में एक मील का पत्थर साबित होगा।

गाजीपुर में 9 सेंटी मीटर प्रति घंटे की रफ्तार से बढ़ रहा गंगा का जलस्तर, लोगों में दहशत

गाजीपुर (संवाददाता)। सैदपुर में नदी के तटवर्ती इलाकों में रहने वाले लोगों की चिंताएं एक बार फिर बढ़ गई हैं। उन्हें यह आभास होने लगा है कि पिछले साल की तरह इस साल भी उन्हें घर छोड़ने की मजबूरी न आ जाए। गंगा के दबाव के कारण गोमती भी करार छोड़कर ऊपर आने को बेताब है। ऐसे में गंगा और गोमती दोनों नदियों में बाढ़ के चलते 47 से अधिक गांव प्रभावित होने की स्थिति में है। जनपद में गंगा नदी का पानी तेजी से बढ़ने लगा है। सोमवार की सुबह से गंगा का जल स्तर अचानक 9 सेंटी मीटर प्रति घंटे की रफ्तार से बढ़ने लगा है। जबकि जल स्तर रविवार को तीन सेंटी मीटर प्रति घंटे की रफ्तार से बढ़ रहा थास वही, शनिवार को दो सेंटी मीटर प्रति घंटे की रफ्तार से जल स्तर बढ़ रहा था। इस तरह वर्तमान समय में नदी का जल स्तर 60.540 मीटर पर पहुंच गया है,जो अब धीरे–धीरे चेतावनी बिंदु की ओर जा रहा है। वहीं, पटना, गोपालपुर, कुसही, खरौना, हथौड़ा सहित कई गांव के किसानों धुक धुकी की बढ़ गई है। वजह तटवर्ती इलाके के खेतों में लगाई गई सब्जियां जलमग्न होना शुरू हो गई हैं।

सैदपुर में नदी के तटवर्ती इलाकों में रहने वाले लोगों की चिंताएं एक बार फिर बढ़ गई हैं। उन्हें यह आभास होने लगा है कि पिछले साल की तरह इस साल भी उन्हें घर छोड़ने की मजबूरी न आ जाए। गंगा के दबाव के कारण गोमती भी करार छोड़कर ऊपर आने को बेताब है। ऐसे में गंगा और गोमती दोनों नदियों में बाढ़ के चलते 47 से अधिक गांव प्रभावित होने की स्थिति में है। गंगा नदी के जलस्तर बढ़ने के कारण तटवर्ती गांव पटना, गोपालपुर, कुसही, खरौना, हथौड़ा समेत कई गांव के किसानों धुक धुकी की बढ़ गई है। गंगा उफन कर किनारे वही गई परवल, बोड़ा, करेला, भिंडी, दलहन से जुड़ी फसलों को नदी का पानी अपने आगोश में लेना शुरू कर दिया है। तहसीलदार सैदपुर अभिषेक कुमार ने बताया राजस्व कर्मियों द्वारा निगरानी की जा रही है। संभावित बाढ़ को देखते हुए आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में सुरक्षा से संबंधित राजस्व कर्मियों आपदा मित्रों सभी को सतर्क कर दिया है।

शिवलिंग पर आज भी हैं कई चोट के निशान, अंग्रेजों के जमाने में बना था ये मंदिर

गाजीपुर (संवाददाता)। पौराणिक कथाओं के अनुसार पहले इस गांव में चारों तरफ जंगल था। मान्यता है कि गंगा उसपार शेरपुर गांव से एक ग्वाला की गाय प्रतिदिन गंगा नदी पार कर देवकली गांव में आकर दूध देती थी। इससे ग्वाला परेशान रहता था। एक दिन गाय के पीछे–पीछे वह गंगा नदी पार करके गया। जहां देखा गाय अपना पूरा दूध जमीन के अंदर धंसे शिवलिंग पर गिरा रही थी। सेवराई तहसील के भदौरा ब्लाक अन्तर्गत देवकली गांव स्थित प्राचीन शिव मंदिर लोगों मे आस्था एवं विश्वास का केंद्र है। अंग्रेजों के जमाने में बना यह मंदिर अपनी चमत्कारिक घटनाओं के चलते आज भी विख्यात है। इस मंदिर को लेकर कई पौराणिक कथाएं प्रचलित है। जिससे यह पता चलता है कि यह शिवलिंग स्वयंभू है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार पहले इस गांव में चारों तरफ जंगल था। मान्यता है कि गंगा उसपार शेरपुर गांव से एक ग्वाला की गाय प्रतिदिन गंगा नदी पार कर देवकली गांव में आकर दूध देती थी। इससे ग्वाला परेशान रहता था। एक दिन गाय के पीछे–पीछे वह गंगा नदी पार करके गया। जहां देखा गाय अपना पूरा दूध जमीन के अंदर धंसे शिवलिंग पर गिरा रही थी। इसी से खुन्नस खाए ग्वाला ने अपने हाथ में लिए टांगी से जमीन पर कईवार किए, जिससे शिवलिंग को भी नुकसान हुआ। तब भगवान शंकर ने खुद सपने में आकर उसे दर्शन दिया। आज भी शिवलिंग में धारदार हथियार से प्रहार की वजह से गड्ढे हैं। मंदिर में शिवलिंग भू सतह से 6 फीट नीचे जमीन में है। मंदिर के भक्त बताते हैं कि मंदिर में सच्चे मन से मांगी गई हर एक मन्नत भगवान भोले शंकर अवश्य पूरी करते हैं। अंग्रेजों के शासन काल में मंदिर के बगल से ही रेलवे लाइन बिछाई जा रही थी। गांव के लोगों ने विरोध किया तो रेलवे के कर्मचारियों ने कहा कि रेलवे लाइन मंदिर के बगल से ही बिछाई जाएगी। शिव में अगर शक्ति है तो वह मंदिर का कपाट किसी दूसरे दिशा में खुल जाए। कहा जाता है कि उसी रात मंदिर का दीवार पूरब दिशा से पश्चिम दिशा की तरफ खुल गया। तभी से मंदिर का कपाट पश्चिम दिशा में हो गया। तब अंग्रेज भी भगवान भोले शंकर के आगे नतमस्तक हो गए। रेलवे लाइन को भी गांव के पूर्व दिशा की तरफ मोड़ दिया गया। यह रेलवे लाइन पंडित दीनदयाल उपाध्याय हावड़ा रूट पर देवकली गांव के पास से गुजरी है। श्रावण मास में मन्दिर समिति के द्वारा जलाभिषेक प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। इसमें श्रद्धालुओं द्वारा गहमर के नरवा गंगा घाट से स्नान के बाद जल भरकर सबसे पहले भगवान भोले शंकर को जलाभिषेक करने की परंपरा है। प्रथम, द्वितीय, तृतीय श्रद्धालुओं का चयन कर उन्हें पुरस्कृत किया जाता है। मंदिर के पुजारी शिवशंकर गिरी ने बताया कि पहले इस मंदिर का कपाट पूरब दिशा की तरफ खुलता था।

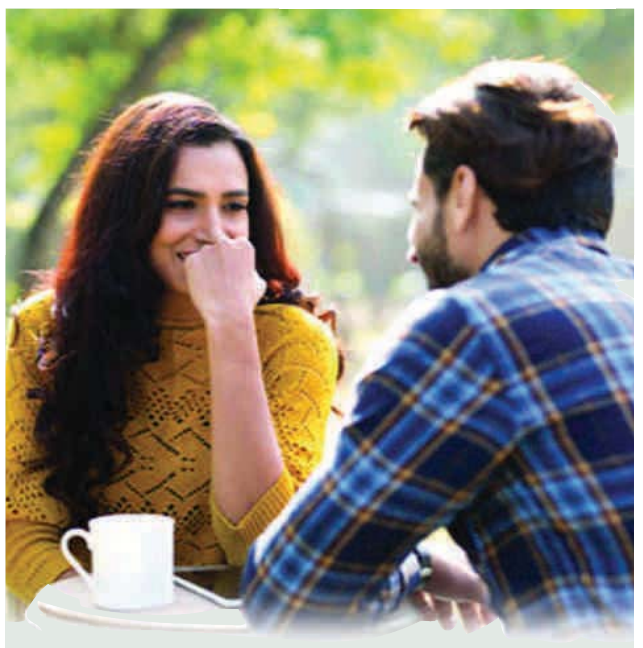

शादीशुदा जिंदगी में इन बातों को करें फॉलो

लड़ाई-झगड़ा, प्यार-मोहब्बत, हर रिश्ते में होना लाजमी है। लेकिन अगर ये झगड़ा बहुत ज्यादा होने लगे तो ये अच्छा नहीं होता क्योंकि इससे रिश्ते टूट सकते हैं। किसी भी रिश्ते में लड़ाई होना बेहद खराब है, हां हल्की-फुल्की नोक झोंक तो हर घर में होती है, पर जब ये ज्यादा होने लगे तो खतरे की घंटी साबित हो सकती है। अगर आपके रिश्ते में ऐसा कुछ हो रहा है तो आप कुछ टिप्स फॉलो कर सकते हैं। आइए, जानते हैं-

विश करें

तो क्या हुआ कि आपकी शादी को कई साल हो चुके हैं, प्यार को बरकरार रखने के लिए आपको हर चीज करनी चाहिए। भले ही आप दोनों के उठने का समय अलग है लेकिन आप दोनों को सुबह एक दूसरे को गुड मॉर्निंग विश करना चाहिए। साथ ही रात में सोने पर भी आपको गुड नाइट विश करके सोना चाहिए। ये एक अच्छी आदत होने के साथ-साथ आपके रिश्ते को जीवित रखने में मदद करता है।

फूल

फूल किसे पसंद नहीं होते, इन दिनों फेस्टिव सीजन है तो यकीनन आपकी वाइफ भी रोजाना अच्छे से तैयार होती होंगी। ऐसे में उनको आप फूल दे सकते हैं। वह इसे अपने बालों में लगा सकती है और ये सच में काफी रोमांटिक होगा।

तारीफ

एक दूसरे की तारीफ करें। आप अपने पार्टनर की किसी फोटो या फिर वो दिन भर कैसी लग रही थी इस बात की तारिफ करें। रोजाना आप दोनों मेहनत करते हैं तो ऐसे में एक दूसरे के काम की तारीफ भी कर सकते हैं।

हाई हील पहनने की हैं शौकीन, पूरे दिन पहनकर रखने के लिए अजमाएं ये हैक्स

हील्स पहनना अधिकतर महिलाओं को पसंद होता है। हील्स पहनने के लिए किसी भी परफेक्ट आउटफिट पहनने की जरूरत नहीं होती, बल्कि किसी भी लुक को परफेक्ट बनाने के लिए आप हील्स पहन सकते हैं। हील्स की एक खासियत यह भी है कि यह पैरों को ज्यादा लंबा दिखाते हैं, जिससे आपका लुक और भी ज्यादा अट्रैक्टिव लगता है। हाई हील्स के साथ एक समस्या यह होती है कि यह बहुत ज्यादा देर तक आपको कंफर्टेबल महसूस नहीं करवाते हैं। इसलिए अगर आप ऑफिस में या फिर किसी मैरिज फंक्शन आदि में पहन रही हैं तो हो सकता है कि आपको पैरों में दर्द का एहसास होने लगे। तो जानते हैं हाई हील्स से जुड़े कुछ हैक्स के बारे में।

हैक 1

डबल टेप का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसे आप तलवे से चिपका दें। यह ट्रिक आपके फुटवियर को पैरों पर ज्यादा आरामदायक तरीके से रखेगी। साथ ही इसके कारण होने वाले फफोले और पैर की उंगलियों में दर्द काफी हद तक कम हो जाएगा।

हैक 2

हील्स में आप इनसोल्स का इस्तेमाल कर सकती हैं। ये सिलिकॉन या कपड़े से बने होते हैं। यह आपके पैरों को हाई हील्स में आगे बढ़ने से रोकते हैं, साथ ही आरामदायक भी होते हैं।

हैक 3

पार्टी में अक्सर हील्स उतारने का मन करता है, लेकिन आप ऐसा करने से बचें क्योंकि जब आप हील्स उतारते हैं तो उस पल तो आपको राहत मिल जाती है लेकिन कई बार ऐसा करते ही पैरों में सूजन आ जाती है और फिर जब आप हील्स दोबारा पहनती हैं तो पैरों में ज्यादा दर्द होता है।

हर लड़की को सीखनी चाहिए ये चीजें

यूं तो आज लड़कियां लड़कों से किसी भी क्षेत्र में कम नहीं हैं। घर की जिम्मेदारियों से लेकर बाहर पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करने तक में, उन्होंने अपनी मेहनत और लगन से अपने लिए एक खास जगह बनाई है। बावजूद इसके आज जानते हैं वो 5 चीजें जिन्हें होम मेकर हो या कोई प्रोफेशनल लड़की, जरूर सीखना चाहिए।

अकाउंट्स मेनटेन रखना

घर संभालना हो या फिर बाहर रहकर नौकरी करते हुए अपने खर्चों को करना हो मैनेज, लड़कियों को अपने फाइनेंशियल डिसीजन खुद लेने आने चाहिए। इसके लिए उन्हें सबसे पहले अपना अकाउंट्स मेंटेन करना जरूर आना चाहिए। आप ऐसा करते हुए आप अपने खर्चों पर भी खुद नजर रख पाएंगी। इसके अलावा लड़कियों को समय पर टैक्स रिटर्न भरना भी जरूर सीखना चाहिए। अपने रिटायरमेंट प्लान से लेकर सेविंग्स तक की प्लानिंग के लिए अपने पैसे को समझदारी से इन्वेस्ट करें।

साइन करने से पहले हर कागज को अच्छे से पढ़ें

ज्यादातर लोग अक्सर किसी डॉक्यूमेंट या कागज को बिना पढ़े ही साइन कर देते हैं। आपकी ये आदत आपको भविष्य में नुकसान पहुंचा सकती है। लड़कियों का मन कोमल होता है। आपका किसी पर विश्वास करना उचित है बावजूद इसके आपको समझदारी से काम लेना भी आना चाहिए। ऐसे में कभी भी किसी भी लीगल या जरूरी डॉक्यूमेंट्स पर साइन करने से पहले उसे जरूर अच्छे से पढ़ें।

बेसिक सेल्फ डिफेंस स्किल्स

वक्त चाहे कोई भी क्यों न हो, आप अपनी किस्मत को आजमाने के लिए रात या दिन का इंतजार थोड़े ही करेंगे। रात हो या दिन, आपको अपनी सुरक्षा के लिए बेसिक सेल्फ डिफेंस मूव्स जरूर आने चाहिए ताकि आप मौका पड़ने पर किसी भी जगह सुरक्षित रह सकें। आप इसके लिए वीकेंड पर सेल्फ डिफेंस कोर्स कर सकती हैं।

सिग्नेचर डिश

हर व्यक्ति अपनी किसी न किसी खासियत की वजह से लोगों के बीच पहचाना जाता है। ऐसे में आप भी अपनी किसी सिग्नेचर डिश की वजह से लोगों के बीच फेमस हो सकते हैं। जब आप डिनर या पार्टी के लिए लोगों या दोस्तों को अपने घर बुला रही हैं तो मेन्यू में आपकी एक सिग्नेचर डिश तो होनी ही चाहिए जिसका स्वाद वो सालों-साल याद रखें।

घर की जिम्मेदारियों से लेकर बाहर पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करने तक में लड़कियों ने अपनी मेहनत और लगन से अपने लिए एक खास जगह बनाई है।

कार का टायर बदलना

अक्सर लोगों को लगता है कि गाड़ी का टायर बदलने का काम सिर्फ लड़के ही अच्छा कर सकते हैं। लेकिन अगर आप भी ड्राइव करती हैं तो यह काम आपको भी जरूर सीखना चाहिए वरना आप कभी भी मुश्किल में पड़ सकती हैं।

डेटिंग प्रोफाइल के लिए फोटो चूज करने में इन टिप्स की लें मदद

ऑनलाइन डेटिंग करना मुश्किल हो सकता है। ऐसे में जब आप ऑनलाइन प्रोफाइल को सेट करते हैं तो आप पूरी तरह से सभी कुछ बेस्ट करने की कोशिश करते हैं। जिसे देख आसानी से कोई भी इंप्रेस हो जाए। हालांकि आपको इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि आपके प्रोफाइल का बायो पूरी तरह से आपको डिस्क्राइब करना चाहिए। अगर आप ऐसा करते हैं तभी आप ज्यादा से ज्यादा मैच पा सकते हैं। इन सभी के साथ ये भी जरूरी है कि आप एक सही प्रोफाइल फोटो चूज करें। ऐसे में आप जब भी डेटिंग प्रोफाइल फोटो चूज करें तो कुछ बातों को ध्यान में रखें। तो चलिए जानते हैं कुछ टिप्स के बारे में जिनकी मदद से आप अपनी प्रोफाइल फोटो सेट कर सकत हैं।

टिप 1

ऐसी फोटो चूज न करें जिसमें आपका चेहरा क्लीयर न हो, या फिर आपका चेहरा दिख ही न रहा हो। ये फोटो अच्छा ऑप्शन नहीं होगा क्योंकि सामने वाले को आपकी फोटो ही नहीं दिखेगी। ऐसी फोटो चुने जिसमें आप पूरी तरह से दिख रहे हों।

टिप 2

कई बार लोग डेटिंग एप पर ग्रुप फोटो लगाते हैं, ऐसे में सामने वाले को ये कंफ्यूजन हो सकता है कि प्रोफाइल किसकी है। तो ध्यान रखें की फोटो सिर्फ आपकी हो न की ग्रुप फोटो हो।

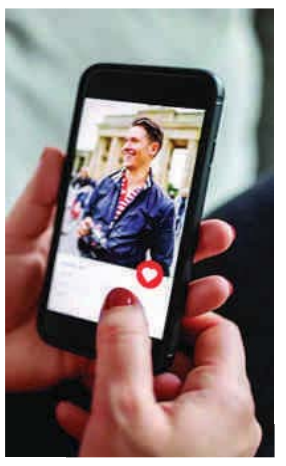

टिप 3

ऑनलाइन डेटिंग एप पर अगर आप फोटो स्लेक्ट कर रहे हैं तो ऐसी फोटो लगाएं जो आपको डिस्क्राइब करे। अगर आपको कैंपिंग पसंद है तो आप कैंपिंग की फोटो लगा सकते हैं या फिर अगर आपको बुक्स पढ़ना पसंद है तो किसी लाइब्रेरी की फोटो लगा सकते हैं।

टिप 4

एक ऐसी फोटो लगाएं जिसमें आप कॉन्फिडेंट नजर आ रहे हैं। कई बार लोग अपने कपड़ों के साथ कॉन्फिडेंट नहीं होते हैं फिर भी उन कपड़ों में वह प्रोफाइल फोटो लगा सकते हैं।

कहीं आपकी चांदी की ज्वेलरी नकली तो नहीं है? ऐसे जानें

सोना और प्लेटिनम की तरह ही चांदी भी एक लोकप्रिय धातु है। आमतौर पर लोग सोने और चांदी के गहने पहनना पसंद करते हैं और वास्तव में चांदी के गहने दिखने में खूबसूरत भी लगते हैं। जब बात चांदी के गहनों को आती है तो लोग मुख्य रूप से इसकी पायल और बिछिया पहनते हैं। चांदी एक कीमती धातु है जो बहुतायत में पाई जाती है और इसका उपयोग गहनों के अलावा पूजा के सिक्के, सजावटी सामान, मूर्तियां और अन्य टिकाऊ वस्तुएं जैसे बर्तन बनाने के लिए भी किया जाता है।

यह एक नरम धातु है और यदि आप अपनी चांदी से बनी चीजों की उचित देखभाल करते हैं, तो यह लंबे समय तक नए जैसी बनी रहती हैं। चाहे आप चांदी के झुमके की एक जोड़ी खरीदें या स्टर्लिंग चांदी से बनी चांदी की अंगूठी और पायल, यदि आप इसकी अच्छी देखभाल करेंगी तो या सालों साल नयी जैसी बनी रहेंगी। लेकिन देखभाल के साथ आपके लिए इन्हें खरीदते समय इस बात का ध्यान रखना भी जरूरी है कि आप जो चांदी खरीद रही हैं वो असली और शुद्ध है या नहीं। वास्तव में यदि आप नकली चांदी खरीदेंगी के बाद भी ये जल्दी ही खराब होने लगती है। आइए जानें कि आप किन युक्तियों से इस बात का पता आसानी से लगा सकती हैं कि आपकी चांदी असली है या नहीं।

लेबल की जांच करें

चांदी की वस्तु असली है या नकली यह जांचने के लिए आभूषण पर लेबल की जांच करना। यदि उस पर एक छोटा लेबिल है जिसमें स्टर' या 'स्टर्लिंग' प्रिंट है, तो इसका मतलब है कि वस्तु चांदी या चांदी चढ़ाया हुआ। जब भी चांदी की वस्तुओं को अंतरराष्ट्रीय या घरेलू स्तर पर बेचा जाता है, तो एक हॉलमार्क ट्रेड स्टैम्प होता है जो धातु को प्रमाणित करता है। किसी दुकान से चांदी की वस्तु खरीदने से पहले, हमेशा 'स्टर्लिंग' के मानक स्टैंप की जांच जरूर करें।

मैग्नेट टेस्ट

मैग्नेट का उपयोग करके यह जांचने का एक और अच्छा तरीका है कि आपने जो चांदी खरीदी है वह असली है या नकली। यदि आपके घर में कोई भी चुम्बक पड़ा हुआ है, तो आप इसका उपयोग प्रदर्शित करती है। इसके लिए एक मैग्नेट का प्रयोग करें और उसे चांदी की वस्तु के करीब लाएं जिसे आप जांचना चाहते हैं और देखें कि क्या यह मैग्नेट से मजबूती से चिपकती है। यदि ऐसा है तो समझ लें कि ये असली चांदी नहीं है।(मोतियों की ज्वेलरी की ऐसे करें केयर)

आइस क्यूब टेस्ट

चांदी के शुद्ध होने या न होने की जांच करने का एक और आसान तरीका बर्फ के टुकड़े का उपयोग करना है। यह विधि चांदी के सिक्कों और अन्य चांदी की वस्तुओं के सपाट सतहों के परीक्षण के लिए आदर्श है। चांदी के सिक्के या गहनों पर आइस क्यूब रखें। यदि आइस क्यूब जल्दी पिघलती है, तो आपके पास जो चांदी की वस्तु है वह असली है। दरअसल चांदी में किसी सामान्य धातु की तुलना में अत्यधिक मात्रा में थर्मल कंडक्टिविटी होती है जो बर्फ को तुरंत पिघला देती है।

वजन परीक्षण

चांदी अधिकांश धातुओं की तुलना में ज्यादा हैवी होती है। इस धातु के वजन में एक विशिष्ट व्यास और मोटाई होती है। यदि चांदी का वजन कम होता है, तो यह स्टर्लिंग चांदी के बजाय हल्के चांदी के मिश्र धातुओं से बनी हो सकती है। यदि इसका वजन अधिक है, तो आमतौर पर चांदी की परत वाली वस्तुओं की तुलना में ठंडी होती है और चमकदार होती है।

ब्लीच टेस्ट

चांदी की धातु की प्रामाणिकता की जांच के लिए ब्लीच का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। बस चांदी की वस्तु पर ब्लीच की एक बूंद डालें। ब्लीच जैसे ऑक्सीडाइजिंग केमिकल के संपर्क में आने के बाद अगर यह धूमिल हो जाए तो यह असली चांदी है। ब्लीच के संपर्क में आने पर असली चांदी तुरंत काली हो जाएगी जबकि नकली धातु पर ब्लीच का कोई असर नहीं होता है। लेकिन हिस्से में ही ब्लीच डालें।

इन सभी युक्तियों से आप अपनी चांदी के गहनों की जांच कर सकते हैं और ये पता लगा सकते हैं कि चांदी असली है या नकली।

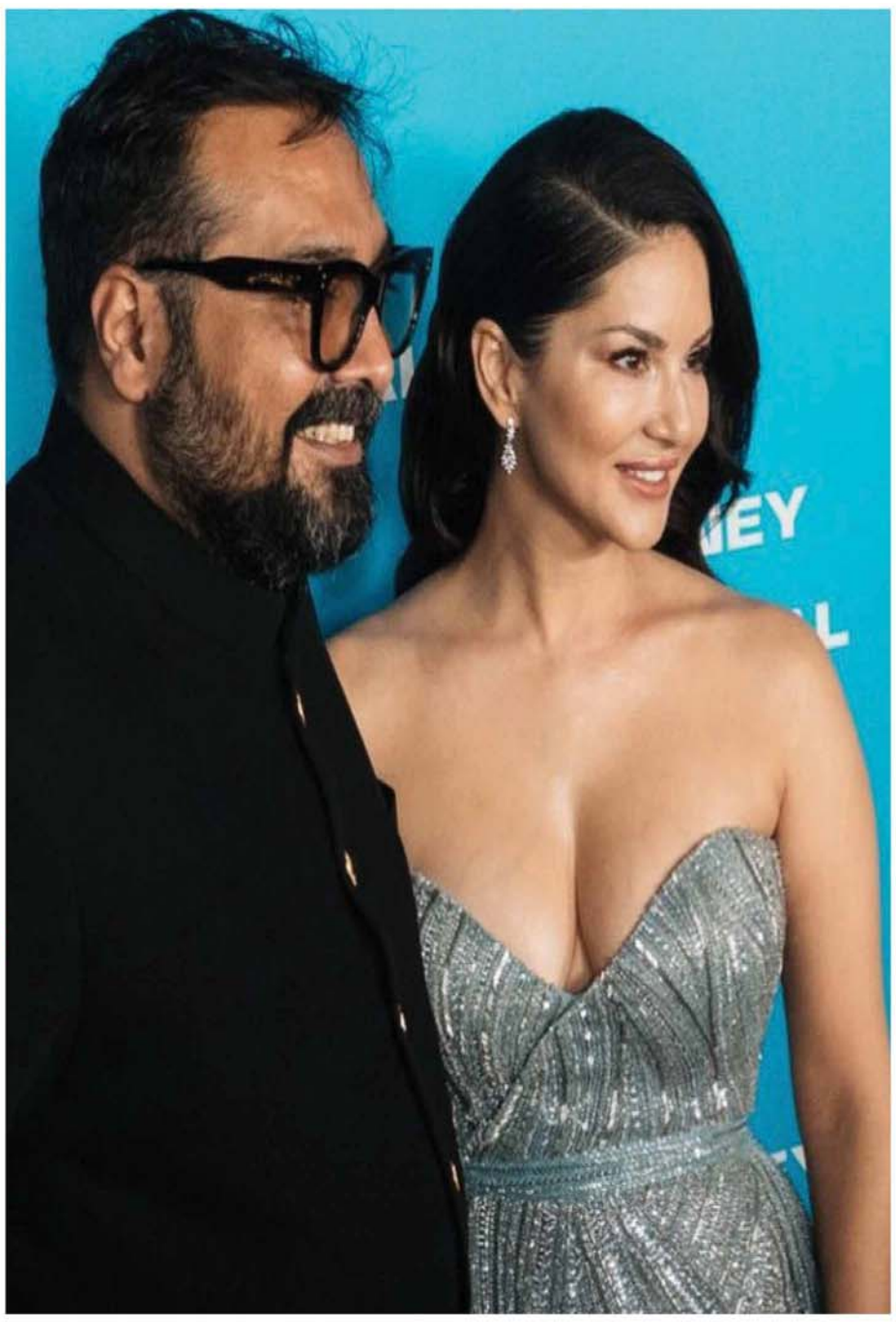

सुहाना ने चुराई सारी लाइमलाइट

बालीवुड स्टार शाहरुख खान की बेटी सुहाना खान अनुराग कश्यप की बेटी आलिया कश्यप की सगाई पार्टी में स्पॉट किया गया, जहां वह ब्लू कलर की साड़ी पहनकर पहुंची और सारी लाइमलाइट चुरा ली। सुहाना के साड़ी लुक के चर्चे अब सोशल मीडिया पर खूब हो रहे हैं। लुक की बात करें तो सुहाना खान दोस्त आलिया और शेन ग्रेगोइरे की सगाई पार्टी में ब्लू कलर की साड़ी पहनकर पहुंची। इसके साथ उन्होंने हाथ में मैचिंग पर्स कैरी किया। मिनिमल मेकअप और खुले बालों से लुक को कंप्लीट करती हुई सुहाना पार्टी में अपने स्टनिंग लुक के खूब जलवे बिखेरती दिखीं और कैमरे के सामने एक से बढ़कर एक पोज देती दिखीं। फैंस को सुहाना का ये लुक खूब पसंद आ रहा है और वो उनकी खूब तारीफ भी करते नजर आ रहे हैं। बता दें कि सुहाना को सुर्खियों में रहना अच्छे से आता है। वह अपने लुक्स और फैशन सेंस से अक्सर लाइमलाइट बटोती नजर आती हैं।

अल्लू ने शुरू की पुष्पा-द रूल के एक और शेड्यूल की शूटिंग

साउथ सुपरस्टार अल्लू अर्जुन के फैंस के लिए एक अच्छी खबर है। अल्लू अर्जुन ने हाल ही में हैदराबाद के लोकप्रिय रामोजी राव स्टूडियो में अपनी बहुप्रतीक्षित फिल्म पुष्पा 2 द रूल के एक और मैराथन शूटिंग शेड्यूल की शूटिंग शुरू कर दी है। यह खबर अल्लू अर्जुन के सभी उत्साही फैंस के लिए यकीनन एक सौगात के रूप में सामने आई है, जो अपने पसंदीदा सुपरस्टार को बिग स्क्रीन्स पर वापस एक्शन में देखने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। वैसे जब से निर्माताओं ने पुष्पा- द रूल का पोस्टर और टीज़र जारी किया है, इसने दुनिया भर के दर्शकों के बीच भारी उत्सुकता और प्रत्याशा पैदा कर दी है। एक सूत्र ने बताया, देश भर के विभिन्न स्थानों पर प्रमुख शूटिंग शेड्यूल पूरा करने के बाद, पुष्पा-द रूल के निर्माता कल से अपना नया शेड्यूल शुरू करेंगे। जबकि नए शेड्यूल के लिए प्री-प्रोडक्शन का काम पूरा हो चुका है, अल्लू अर्जुन और अन्य कलाकार कल से फिल्म की शूटिंग शुरू करेंगे। सूत्र ने आगे बताया, दिलचस्प बात यह है कि खबर मिली है कि कास्ट हैदराबाद में रामोजी राव फिल्मसिटी में कुछ अहम सीन्स की शूटिंग करने जा रहे हैं, जहां पर विशाल सेट बनाए जा रहे हैं। क्योंकि यह एक सीक्वल है, इसलिए निर्माता फिल्म को दर्शकों के लिए शानदार बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। अपने सुपरस्टारडम के साथ अल्लू अर्जुन की लोगों पर, खासकर दुनिया भर में उनके प्रशंसकों पर मजबूत पकड़ है।

सनी लियोन ने की अनुराग कश्यप की तारीफ

एक्ट्रेस सनी लियोन ने डायरेक्टर अनुराग कश्यप की जमकर तारीफ की। उन्होंने कहा कि उनमें लोगों को अलग नजरिए से देखने की क्षमता है, जो उन्हें खास बनाती है। सनी ने बताया, मुझे निश्चित रूप से लगता है कि वह एक जादूगर हैं। उनके पास लोगों को अलग नजरिए से देखने की क्षमता है, जो उन्हें खास बनाती है। वह चुनते हैं कि वह किसके साथ काम करें और कैसे उनकी मदद करें, पेशेवर या व्यक्तिगत रूप से उनका कैसे पालन-पोषण करें। वह अद्भुत व्यक्ति हैं। एक्ट्रेस ने एक सवाल के जवाब में कहा, वास्तव में जीवन में कुछ भी हो सकता है और एक फोन कॉल के भीतर आपका जीवन बदल सकता है। मैं कान में इस बड़ी शुरुआत और कैनेडी को कई फेस्टिवल्स से दुनिया भर में स्वीकार किए जाने के बाद जो कुछ भी होने वाला है, उसे लेकर बहुत उत्साहित हूं। कश्यप द्वारा निर्देशित फिल्म कैनेडी में राहुल भट्ट भी हैं। नियो-नोयर थ्रिलर फिल्म अग्ली (2013) और दोबारा (2022) के बाद यह तीसरी बार है, जब कश्यप और भट्ट एक साथ काम कर रहे हैं।

सिमरत को गदर 2 का बेसब्री से इंतजार

बालीवुड एक्ट्रेस सिमरत कौर, सनी देओल, अमीषा पटेल के साथ अपनी बड़ी बॉलीवुड फिल्म गदर 2 का बेसब्री से इंतजार कर रही हैं।गदर 2 में उनके आने को लेकर ही लोगों में बहुत नाराजगी थी और वे शुरू से ही सिमरत को फिल्म में लेने की बात से नाराज थे। डर्टी हरी और हिंदी फिल्म सोनी सहित कुछ तेलुगू फिल्मों की वजह से सिमरत को भारी ट्रोलिंग का सामना करना पड़ा। अब आखिरकार सिमरत ने उस ट्रोलिंग पर चुप्पी तोड़ी है जो उन्हें एक साफ-सुथरी पारिवारिक फिल्म में लिए जाने पर मिल रही है। एक्ट्रेस का मानना है कि लोग हमेशा उन्हें किसी न किसी बात पर आंकेंगे। अब तक खुद को मिली ट्रोलिंग के बारे में बात करते हुए सिमरत कौर ने से कहा, मैं एक सेंसेटिव और इमोशनल औरत हूं। जब मैं एक्ट्रेस नहीं थी, तब भी मैं दूसरों को जज करती थी और सोशल मीडिया पर अपनी राय जताती थी। लेकिन मैं जानती हूं कि जब हम कोई घटिया कमेंट करते हैं तो इससे सामने वाले को ठेस पहुंच सकती है। इसलिए, मैं सोशल मीडिया पर अपनी बातें लिखने से पहले हमेशा सोचती थी। ये बिज़नेस का एक हिस्सा है। ये जिंदगी भर चलता रहेगा।

मुगल-ए-आजम की 63वीं वर्षगांठ पर सायरा बानो ने इंस्टा पर लिखा भावुक नोट

दिलीप कुमार, मधुबाला और पृथ्वीराज कपूर स्टारर क्लासिक फिल्म मुगल-ए-आजम की 63वीं वर्षगांठ पर अभिनेता दिलीप को याद करते हुए दिग्गज अभिनेत्री सायरा बानो ने इंस्टाग्राम पर एक भावुक नोट लिखा है।

5 अगस्त 1960 में प्रदर्शित हुई फिल्म मुगल-ए-आजम को के. आसिफ ने बनाया था, जिसमें पृथ्वीराज कपूर, दिलीप कुमार, मधुबाला और दुर्गा खोटे ने मुख्य भूमिका निभाई थी। फिल्म मुगल-ए-आजम मुगल राजकुमार सलीम और दरबारी नर्तकी अनारकली (मधुबाला द्वारा अभिनीत) की प्रेम कहानी है। सलीम के पिता, सम्राट अकबर (पृथ्वीराज द्वारा अभिनीत) इस रिश्ते को अस्वीकार करते हैं, जिसके कारण पिता और पुत्र के बीच युद्ध होता है। अभिनेत्री सायरा बानो ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो साझा किया, जिसमें हम इस फिल्म की झलक देख सकते हैं। वीडियो में फिल्म के ब्लैक एंड व्हाइट और रंगीन दोनों अंश दिखाए गए हैं। इसमें दिवंगत लता मंगेशकर की लोकप्रिय गीत, प्यार किया तो डरना क्या और मोहे पनघट पे मौजूद हैं। उन्होंने एक नोट में लिखा, भारतीय सिनेमा के इतिहास में, किसी भी फिल्म ने दर्शकों के दिलों पर मुगल-ए-आजम जितनी गहरी छाप नहीं छोड़ी है। के. आसिफ की यह फिल्म भारतीय फिल्म निर्माण की महिमा के लिए एक कालातीत प्रमाण के रूप में खड़ी है। इस फिल्म में साहेब की मनमोहक भूमिका ने इसमें अतिरिक्त परत जोड़ दी है। उन्होंने आगे कहा, साहेब का किरदार सलीम मंत्रमुग्ध करने वाला था। चरित्र में जान डालने की उनकी क्षमता, चाहे कोमल रोमांस के क्षण हों या भयंकर विद्रोह, देखने लायक थे। उनका शक्तिशाली प्रदर्शन आज तक दर्शकों दिलों में गूंजता है। सायरा ने आगे लिखा कि मुगल-ए-आजम समय की सीमाओं को पार करती है। उन्होंने साझा किया, फिल्म की समाप्ति तक की यात्रा अपने आप में किसी महाकाव्य गाथा से कम नहीं थी, जो आश्चर्यजनक रूप से दस वर्षों तक चली। लुभावनी राजसी शीश महल से लेकर ठुमरी जैसी कालजयी संगीत धुनों तक, फिल्म के हर पहलू पर विस्तार से ध्यान दिया गया। नौशाद द्वारा बनाई गई मोहे पनघट पे और कव्वाली तेरी महफ़िल में में सौंदर्यपूर्ण रूप से लेकर मनमोहक वेशभूषा तक सब दिखाया गया है। फिल्म आज भी सिनेमाई प्रतिभा का एक प्रतीक बनी हुई है, जो हमें भारतीय सिनेमा की कलात्मक ऊंचाइयों की याद दिलाती है। यह फिल्म निर्माताओं और अभिनेताओं की पीढ़ियों को प्रेरित करती है, यह याद दिलाती है कि सच्ची कलात्मकता की कोई सीमा नहीं होती है और यह समय की कसौटी पर खरी उतरती है। मुगल-ए-आजम डिजिटल रूप से रंगीन होने वाली पहली फिल्म थी जो पहली बार थिएटर में दोबारा रिलीज हुई थी। फि ?ल्म का रंगीन संस्करण 12 नवंबर 2004 को रिलीज किया गया था।

सीता रामम की पहली सालगिरह पर मृणाल ने लिखा भावुक नोट

एक्ट्रेस मृणाल ठाकुर, जिन्हें हाल ही में स्ट्रीमिंग एंथोलॉजी लस्ट स्टोरीज 2 में देखा गया था, शनिवार को अपनी तेलुगु डेब्यू फिल्म सीता रामम की पहली सालगिरह मना रही हैं। फिल्म को दर्शकों से अपार प्यार और सराहना मिली, जिससे साउथ फिल्म इंडस्ट्री में मृणाल की पहचान को मजबूती मिली। शनिवार को, एक्ट्रेस ने अपने सोशल मीडिया पर एक दिल छू लेने वाला वीडियो शेयर किया, जिसमें फिल्म के शानदार पलों को कैद किया गया। उन्होंने कैप्शन में लिखा, डियर ऑडियंस, यह मेरा पहला तेलुगु डेब्यू था और आप सभी ने मुझे जो प्यार दिया, वह मेरे सपनों से परे है। आपने मुझे अपनी तेलुगु अम्माई के रूप में स्वीकार किया। प्यार की इस अविश्वसनीय और यादगार यात्रा को इतना खास बनाने के लिए धन्यवाद। मैं वादा करती हूं कि अगले कई सालों तक अलग-अलग तरह के किरदारों के साथ आपका मनोरंजन करती रहूंगी। हनु राघवपुडी सीता का बेस्ट वर्जन लाने के लिए धन्यवाद। उन्होंने आगे कहा, दुलकर सलमान, मैं इस बारे में बार-बार कह सकती हूं कि आपने मेरे लिए इस पूरे अनुभव को कितना यादगार बना दिया है (मैंने आपके लिए जो जन्मदिन की पोस्ट डाली है, उसे पढ़ें, वह आपको बताएगा कि ऐसा क्यों है)। इसके लिए आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद। फिल्म, जिसमें दुलकर सलमान और रश्मिका मंदाना भी थे, को तमिल और मलयालम में डब वर्जन के साथ तेलुगु में रिलीज किया गया था। सीता रामम की सफलता के बाद मृणाल ठाकुर को तेलुगु सिनेमा में दो और प्रोजेक्ट मिले हैं। इस बीच, एक्ट्रेस के पास तेलुगु फिल्म हाय नन्ना भी है।

तारक मेहता के मेकर्स के खिलाफ शैलेश लोढ़ा ने जीता केस मिला 1 करोड़ रुपए से ज्यादा बकाया पैसा

टीवी का पॉपुलर शो तारक मेहता का उल्टा चश्मा बीते कुछ समय से विवादों में घिरा हुआ है। कई कलाकार शो छोड़कर चले गए हैं। पिछले साल तारक मेहता का किरदार निभाने वाले शैलेश लोढ़ा ने भी शो को अलविदा कह दिया था। इसके बाद शैलेश ने शो के प्रोड्यूसर असित कुमार मोदी और उनकी प्रोडक्शन कंपनी पर केस दर्ज किया था। शैलेश लोढ़ा ने बकाया राशि भुगतान नहीं? किए जाने पर मेकर्स के खिलाफ केस किया था। वहीं अब इस मामले में आखिरकार शैलेश के पक्ष में फैसला आ गया है। शैलेश लोढ़ा ने अपना बकाया चुकाने के लिए नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल से संपर्क किया और दिवाला और दिवालियापन संहिता की धारा 9 के तहत मामले की सुनवाई हुई और वर्चुअल माध्यम से शैलेश लोढ़ा और असित मोदी के बीच समझौता हुआ। रिपोर्ट के अनुसार इस मुकदमें का फैसला इस साल मई में आया था। तारक मेहता का उल्टा चश्मा के निर्माता असित कुमार मोदी को शैलेश लोढ़ा को सेटलमेंट अमाउंट के रूप में 1,05,84,000 रुपए का भुगतान करना पड़ा। खबरों के अनुसार शैलेश लोढ़ा ने कहा, यह लड़ाई कभी भी पैसे को लेकर नहीं थी। यह न्याय और आत्मसम्मान की तलाश के बारे में था। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैंने कोई लड़ाई जीत ली है और मुझे खुशी है कि सच्चाई की जीत हुई है। वह चाहते थे कि मैं अपना बकाया चुकाने के लिए कुछ कागजात पर साइन करूं। उनकी कुछ शर्तें थीं कि आप मीडिया से बात नहीं कर सकते और अन्य चीजें। मैं अपना पैसा पाने के लिए किसी कागजात पर साइन क्यों करूंगा? बता दें कि शैलेश लोढ़ा तारक मेहता शो से शुरुआत से जुड़े थे। उन्होंने अप्रैल 2022 में अचानक यह शो छोड़ दिया था। बताया जा रहा था कि शैलेश का शो के मेकर्स संग कुछ विवाद हो गया था। वे अपने रोल से खुश नहीं थे और कुछ नया करना चाहते थे।

कांग्रेस ने छत्तीसगढ़ और तेलंगाना के चुनाव पर्यवेक्षक बदले

नई दिल्ली। कांग्रेस ने आगामी महीनों में पांच राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनावों की तैयारियों के मद्देनजर नियुक्त चुनाव पर्यवेक्षकों में फेरबदल किया है। अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि फेरबदल के बाद अब डॉ सिरिवेल्ला प्रसाद को छत्तीसगढ़ और मीनाक्षी नटराजन को तेलंगाना के लिए चुनाव पर्यवेक्षक का दायित्व सौंपा गया है।

अलगाववादी नेता शब्बीर अहमद शाह को मिलेगी जमानत या नहीं ? दिल्ली हाईकोर्ट ने याचिका को लेकर NIA से पूछा

नई दिल्ली। आतंकी फंडिंग मामले में आरोपित कश्मीरी अलगाववादी नेता शब्बीर अहमद शाह की जमानत याचिका पर दिल्ली हाई कोर्ट ने राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) से रुख पूछा। न्यायमूर्ति सिद्धार्थ मृदुल और न्यायमूर्ति अनीश दयाल की पीठ ने निचली अदालत के जमानत देने से इनकार करने के आदेश के खिलाफ शाह की अपील पर एनआइए को नोटिस जारी किया। मामले में अगली सुनवाई 12 सितंबर को होगी। अपील याचिका में अपीलकर्ता ने जमानत अर्जी खारिज करने वाले निचली अदालत के निर्णय पर सवाल उठाते हुए कहा कि वह चार साल से हिरासत में है और मुकदमे को समाप्त होने में लंबा समय लगेगा। यह भी तर्क दिया कि अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश का आदेश मामले के सुबूतों और संभावनाओं के कानून के विपरीत है।

400 से अधिक गवाहों से होनी है पूछताछ

शाह ने कहा कि अभी भी 400 से अधिक गवाहों से पूछताछ की जानी है और केवल 15 गवाहों से पूछताछ की गई है। इस पर एनआइए के वकील ने कहा कि वह पीठ के समक्ष संबंधित सामग्री दाखिल करेंगे। यह पूरा मामला वर्ष 2017 में एनआइए ने पथराव, सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने और भारत सरकार के खिलाफ युद्ध छेड़ने की साजिश रचने के लिए धन जुटाने की साजिश के लिए 12 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया था।

करावल नगर में आगजनी मामले में दो बरी, दंगे के दौरान जलाया गया था ऑटो व दो लोगों से हुई थी लूट

पूर्वी दिल्ली। कड़कड़डूमा कोर्ट ने दिल्ली दंगे के दौरान करावल नगर इलाके में ऑटो में आगजनी व दो ऑटो चालकों से हुई लूट के दो आरोपितों को बरी कर दिया है। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश पुलस्त्य प्रमाचला के कोर्ट ने आरोपितों के खिलाफ पर्याप्त साक्ष्य न होने की वजह से वीरेंद्र और रोहित को बरी कर दिया।

मोहनीश हुसैन ने पुलिस को बताया था कि 24 फरवरी 2020 को वह ऑटो लेकर कालीघटा रोड पर खड़े थे। तभी दंगाई भीड़ आई और उनके ऑटो में आग लगा दी, उनसे नकदी व मोबाइल लूट लिया था।

चार आरोपित हुए थे गिरफ्तार

इस मामले में पुलिस ने आगजनी, लूट, दंगाई भीड़ का हिस्सा होने समेत कई धाराओं में प्राथमिकी की थी। पुलिस ने इस मामले में चार आरोपित रंजीत सिंह, सोनू, वीरेंद्र और रोहित को गिरफ्तार किया था। सोनू की केस की सुनवाई के दौरान मौत हो गई थी कोर्ट ने रंजीत के खिलाफ कार्रवाई निरस्त कर दी थी।

भीड़ ने दो ऑटो चालकों के साथ की थी लूटपाट

इन चारों पर आरोप था कि फरवरी 2020 में करावल नगर में हुए दंगे में यह दंगाइयों का हिस्सा थे। भीड़ ने दो ऑटो चालकों के साथ लूटपाट की थी, एक ऑटो को आग के हवाले कर दिया था। पुलिस की तरफ से कोर्ट में आरोपितों के खिलाफ ठोस सुबूत पेश नहीं किए गए। जिसके चलते कोर्ट ने दोनों आरोपितों को बरी कर दिया।

राहुल गांधी के संसद पहुंचने पर इंडिया के नेताओं ने किया जोरदार स्वागत

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी का सोमवार को संसद भवन पहुंचने पर विपक्षी दलों के नेताओं ने जोरदार स्वागत किया।

श्री गांधी सोमवार को दोपहर 12 बजे से कुछ पहले संसद भवन पहुंचे तो वहां पहले से मौजूद इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव एलायंस (इंडिया) के नेता अधीर रंजन चौधरी, पी चिदंबरम, राम गोपाल यादव, संजय राउत, तिरुचि शिवा, प्रमोद तिवारी और अन्य नेताओं ने उनका स्वागत किया। ये नेता

राहुल गांधी जिंदाबाद और इंडिया इंडिया के नारे लगा रहे थे। कांग्रेस नेताओं ने एक-दूसरे को लड्डू भी खिलाये। श्री गांधी के साथ ही उनकी मां एवं कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी भी थी।

श्री गांधी अपने वाहन से वहां उतरने के बाद संसद भवन परिसर स्थित राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा के पास गये और उनको नमन किया।

श्री गांधी की मोदी उपनाम को लेकर टिप्पणी करने के कारण सूरत की एक अदालत में दो वर्ष के कारावास की सजा सुनाये जाने के बाद लोकसभा की सदस्यता रद्द कर दी गयी थी। शुक्रवार को उच्चतम न्यायालय से राहत मिलने के बाद श्री गांधी की सोमवार को लोकसभा की सदस्यता बहाल कर दी गयी।

नरेला स्टेशन के विकास से ग्रामवासी खुश लेकिन मेट्रो की मांग दोहराई

नई दिल्ली। नरेला स्टेशन के पुनर्विकास से देहात के निवासियों ने खुशी तो जताई लेकिन साथ ही अपनी मेट्रो वाली मांग को भी पुख्ता तरीके से सरकार के सामने रखा। रिठाला बवाना नरेला मेट्रो रूट संघर्ष समिति ने कहा कि हमने नरेला बवाना क्षेत्र में मेट्रो की मांग प्रधानमंत्री तक पहुंचाने के लिए सांसद हंस राज हंस से आग्रह किया है।

रेल मंत्रालय द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के देश भर के 508 रेलवे स्टेशनों का पुनर्विकास योजना के कार्यक्रम में नरेला स्टेशन पहुंचे कई ग्रामवासियों ने यह मांग रखी। वहीं कुछ अन्य ग्रामवासियों ने बताया कि नरेला रेलवे स्टेशन के बाहर हमने अपनी मांग रिठाला से नरेला तक मेट्रो को लेकर आक्रोश दर्ज कराना था। लेकिन उत्तरी पश्चिमी दिल्ली के सांसद हंसराज हंस के आग्रह पर हमने कार्यक्रम रद्द किया क्योंकि हम भी नरेला रेलवे स्टेशन को नया आयाम मिलने से नरेलावासी भी खुश है। समिति के संयोजक हेमराज बंसल, दिल्ली पंचायत संघ प्रमुख थान सिंह यादव, बरवाला निवासी दयानंद वत्स ने पूर्व भाजपा अध्यक्ष भाजपा विजेंद्र गुप्ता, पूर्व विधायक नील दमन खत्री, किसान मोर्चा विनोद सहरावत को भी इस मांग से अवगत करवाया।

मोदी ने 10 साल में नकारात्मक राजनीति की: खड़गे

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर सीधा हमला करते हुए कहा है कि उन्होंने पिछले 10 साल के दौरान सिर्फ नकारात्मक राजनीति की है और उन्होंने इस दौरान जो कुछ कह उससे समाज में कटुता पैदा हुई है।

श्री खड़गे ने कहा, प्रधानमंत्री मोदी जी, पिछले 10 सालों से आपने केवल तोड़ने की नकारात्मक राजनीति की है। आपकी वाणी से अब 'इंडिया' के लिए भी कटु शब्द निकल रहें हैं। पिछले तीन महीने से मणिपुर हिंसा को आप क़ाबू नहीं कर पाए हैं। आपकी विभाजनकारी राजनीति ने समुदायों को आपस में ऐसे

लड़वाया है कि वहाँ गृह युद्ध जैसे हालात हो गए हैं।अब तक क़रीब 150 से ज़्यादा लोग मारे जा चुके हैं। हरियाणा का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा, हरियाणा में जो हो रहा है वो पूरा देश देख रहा है। जहां दशकों से दंगा नहीं हुआ, वहाँ आपकी सरकार और आपके संघ परिवार के लोग भाई को भाई से लड़वा रहें है। कट्टरपंथी दोषी समाज के शत्रु हैं, चाहे वो किसी भी धर्म के हो।

उन्होंने कहा, आपने पिछले 10 वर्षों में देश को सिर्फ़ बेरोज़गारी, महंगाई, आर्थिक असमानता, ग़रीबी, महिला असुरक्षा, दलित उत्पीड़न और सामाजिक अन्याय दिया है। इन सबको समाप्त करने की ज़रूरत है। आपकी सरकार के लिए यह असंभव लगता है। जनता में निराशा है। समस्याओं का निराकरण करने के बजाय प्रधानमंत्री जी रोज़ अपने लिए एक नये उद्घाटन का प्रोग्राम ढूँढते हैं। सरकारी आयोजनों में राजनीति करते हैं और विपक्ष पर हमला करते हैं।

संघ परिवार पर हमला करते हुए श्री खड़गे ने कहा, आपके राजनैतिक पूर्वजों ने भारतीय को भारतीयों के ख़िलाफ़ किया, अंग्रेज़ी हुकूमत का साथ दिया, मुखबिरी की और भारत छोड़ो का कड़ा विरोध किया। गाँधी हत्या की साज़िश में संदेहपूर्ण भूमिका रही। राष्ट्रीय ध्वज–तिरंगे का विरोध किया। आज़ादी के 52 साल तक उसे फहराया नहीं। सरदार पटेल को उनको तिरंगे का बहिष्कार करने के लिए चेतावनी देनी पड़ी। जो 75 सालों में नहीं याद आया वो भारत छोड़ो अब याद आ रहा है। यही हमारी जीत है। भारत जुड़ेगा, 'इंडिया' जीतेगा।

राष्ट्रीय वैस्कुलर दिवस पर जागरूकता बढ़ाने को एकजुट हुए देश के 26 शहर

नई दिल्ली। वैस्कुलर सोसाइटी ऑफ इंडिया (6 अगस्त 1994 को चेन्नई में गठित) ने अखिल भारतीय राष्ट्रीय वैस्कुलर दिवस का आयोजन किया। इस अवसर पर देश भर के 26 शहरों में 'अंगविच्छेद मुक्त भारत' के थीम पर एक वॉकथॉन का आयोजन कर जागरूकता बढ़ाने का संदेश दिया गया - 'एक मील चलो, मुस्करा कर जीओ'। मेजर ध्यानचंद नेशनल स्टेडियम से शुरू वॉकथॉन इंडिया गेट की परिक्रमा कर वापस नेशनल स्टेडियम पहुंचा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के फिट इंडिया विजन के मद्देनजर वीएसआई ने वॉकथॉन का आयोजन किया जिसका मुख्य लक्ष्य शरीर के अंग विच्छेद की स्थिति पैदा करने वाले कारणों (डायबीटीज़, धूम्रपान, ब्लड प्रेशर और कोलेस्ट्रॉल बढ़ने) से बचना है। स्वास्थ्य की बेहतर देखभाल, जागरूकता और किसी अन्य समस्या का समय से निदान कर यह लक्ष्य पूरा होगा।

वैस्कुलर सोसाइटी ऑफ इंडिया के सचिव डॉ. तपिश साहू ने कहा, ÷हमारा मिशन एम्प्युटेशन

फ्री इंडिया बनाने के मकसद से संपूर्ण वैस्कुलर स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध करा सभी समुदायों को अधिक स्वस्थ बनाना है। अभियान में पूरे भारत का उत्साह देख कर हम बहुत प्रोत्साहित हैं। आज राष्ट्रीय वैस्कुलर दिवस पर देश भर के 26 शहरों में एक साथ वॉकथॉन का आयोजन हुआ, जिसमें 8,000 से अधिक लोगों ने बड़े उत्साह से भाग लिया।''

इस पहल को अपना समर्थन देने के लिए कई अन्य प्रसिद्ध वैस्कुलर सर्जन उपस्थित थे जिनमें डॉ. वी.एस. बेदी, डॉ. कर्नल कुमुद राय, डॉ. राजीव पारख, डॉ. तरूण ग्रोवर, डॉ. संदीप अग्रवाल, डॉ. अजय यादव, डॉ. रावुल जिंदल और डॉ. अपूर्व श्रीवास्तव (कोषाध्यक्ष, वीएसआई) खास तौर से उल्लेखनीय हैं।

आज के दौर में जब भारत को दुनिया का डायबीटीज़ कैपिटल कहा जा रहा है इस राष्ट्रीय अभियान की अहमियत बढ़ जाती है। सेहत के लिए हानिकारक जीवनशैली और गलत खान-पान के चलते एक बड़ी आबादी पर अंग-विच्छेद का खतरा है जबकि इसकी रोकथाम मुमकिन है। यह अभियान पूरे देश में जागरूकता बढ़ाने का प्रयास है ताकि जीवनशैली में बदलाव कर लोग अंग-विच्छेद की नौबत नहीं आने दें और यदि जरूरत पड़े तो जल्द इलाज कराएं। इससे उनके जीवन की गुणवत्ता बनी रहेगी।

वैस्कुलर रोगों के मरीजों के संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए स्वीकार्य मानक पूरा करने के लिए नवीनतम तकनीक अपनाना। वैस्कुलर सर्जनों और वैस्कुलर रोगों के बारे में जागरूकता बढ़ाना- भविष्य की बड़ी चुनौतियों में से एक है - स्वास्थ्य कर्मियों और सर्वसाधारण लोगों में जागरूकता बढ़ाना। वैस्कुलर रोगों के सामान्य लक्षण -पैर में सूजन, पैरों में अचानक दर्द/रंग खराब होना, घाव नहीं भरना, गैंग्रीन, नसें दिखना और फैल जाना।

यदि आपको एक भी उपरोक्त लक्षण है, तो जल्द से जल्द अपने नजदीकी वैस्कुलर और एंडोवस्कुलर सर्जन से परामर्श लें। वे आपके वैस्कुलर स्वास्थ्य की स्थिति को सबसे अच्छी तरह समझेंगे और आपके अंगों का संपूर्ण उपचार करने में सक्षम हैं।

राज्यसभा में पेश होने से पहले दिल्ली विधेयक पर कांग्रेस में दो फाड़, संदीप दीक्षित कर रहे केंद्र का समर्थन

नई दिल्ली। दिल्ली सेवा विधेयक को लेकर संसद से लेकर दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में हलचल मची हुई है। इसी बीच, दिल्ली कांग्रेस नेता संदीप दीक्षित विधेयक को लेकर अपनी पार्टी के रुख से अलग हटकर बयान दिया है। संदीप दीक्षित ने इस विधेयक का समर्थन करते हुए कहा, ' इस बिल का विरोध करना गलत होगा।'

संदीप दीक्षित ने कहा, 'यह विधेयक लोकसभा में पारित हो चुका है, क्योंकि वहां सरकार के पास बहुमत है। यह विधेयक राज्यसभा में पेश किया जाएगा, हालांकि सरकार के पास यहां बहुमत नहीं है, लेकिन लोकसभा की तरह अगर कुछ अन्य दल इस विधेयक का समर्थन करेंगे तो यह पारित हो जाएगा।'

कांग्रेस ने जारी किया व्हिप

दिल्ली सेवा विधेयक को लेकर आम आदमी पार्टी और कांग्रेस ने व्हिप जारी की है। राज्यसभा में पेश होने जा रहे इस बिल के लिए दोनों ही पार्टियों ने अपने-अपने सांसदों को सदन में मौजूद रहने के निर्देश दिए हैं। लोकसभा में पेश होने के बाद भारी हंगामे और विपक्ष के वॉक आउट के बाद यह बिल पास हो गया था। लोकसभा के बाद गृह मंत्री अमित शाह इस बिल को राज्यसभा में लाने जा रहे हैं।

अरविंद केजरीवाल ने विपक्षियों से मांगी मदद

दिल्ली अध्यादेश के आने के बाद से ही सीएम अरविंद केजरीवाल ने देश के विपक्षी पार्टियों से समर्थन जुटाने की जद्दोजहद शुरू कर दी थी। केजरीवाल ने नीतिश कुमार से लेकर स्टालिन तक सबसे मुलाकात की थी। यह बिल केजरीवाल और उनकी राजनीति के लिए काफी अहम माना जा रहा है।

चोरों के लिए दिल्ली सबसे पसंदीदा शहर! रोजाना चुरा रहे 100 से ज्यादा गाड़ियां, छह माह में उड़ाए 19 हजार वाहन

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस की नाक के नीचे राजधानी में हर रोज औसतन 107 वाहन चोरी हो जाते हैं। खास बात यह है कि चोर मॉडल और रंग के हिसाब से महंगी कारों के अलावा बाइक तक चोरी कर रहे हैं।

करीब दो करोड़ से अधिक जनसंख्या वाली दिल्ली में पार्किंग एक बड़ी समस्या है। पार्किंग के लिए समुचित जगह न होने से अधिकतर लोग अपने वाहनों को अपनी नजरों से दूर कहीं भी पार्क करने को मजबूर होते हैं जहां से वाहन चोर उसे उड़ा ले जाते हैं।

दिल्ली पुलिस के इस वर्ष के छह माह के आंकडों पर नजर डालें तो राजधानी के विभिन्न इलाकों से 19 हजार से ज्यादा वाहन चोरी हो चुके हैं। यानी औसतन हर रोज दिल्ली से 107 वाहन चोरी होते हैं। वाहन चोरी के बढ़ते मामलों पर अंकुश लगाने में दिल्ली पुलिस पूरी तरह विफल साबित हो रही है।

10 साल पहले नहीं होती थी ऑनलाइन FIR

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि वाहन चोरों के लिए दिल्ली सबसे पसंदीदा शहर इसलिए है क्योंकि यहां से वाहन चोरी कर वे वाहनों को लेकर आसानी से पड़ोसी राज्यों में प्रवेश कर जाते हैं। करीब 10 वर्ष पहले वाहन चोरी के मामले में ऑनलाइन एफआइआर करने की सुविधा नहीं थी, तब वाहन चोरी के मामले कम होते थे।

इसके पीछे कारण यह था कि उस दौरान वरिष्ठ अधिकारियों का थाना पुलिस पर एक प्रकार का दबाव रहता था। अगर किसी थाना क्षेत्र में वाहन चोरी अधिक होते थे तब थानाध्यक्ष को जवाब देना होता था। इलाके के बीट अफसरों पर भी वाहन चोरी के मामले को रोकने का दबाव रहता था। वाहन चोरी की घटना होने पर बीट अफसरों के अलावा इलाके के एसीपी व थानाध्यक्ष भी मौके पर पहुंच कर मुआयना करते थे।

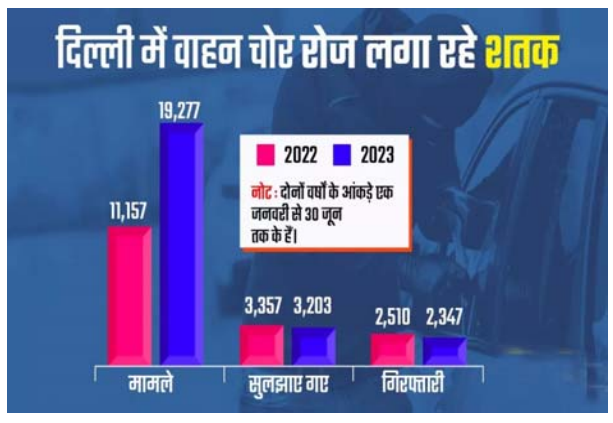

19,277 वाहन हुए चोरी, सुलझे मात्र 3,357

थाने में केस दर्ज होने पर जांच अधिकारी को उक्त मामले को सुलझाने का दबाव रहता था। लेकिन आनलाइन आनआइन एफआइआर की सुविधा शुरू होने के बाद पुलिस अब न तो मौके पर जाकर मुआयना करती है और न ही मामले की गंभीरता से तफ्तीश करती है।

यही कारण है कि वाहन चोरी के मामलों को सुलझाने की दर काफी कम है। गत छह माह में वाहन चोरी के 19 हजार से अधिक मामलों में से पुलिस ने मात्र 3,357 मामलों को ही सुलझा सकी है।

कब-कब होती है वाहन चोरी की घटनाएं...

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि अब तक पकड़े गए गिरोहों का वाहन चोरी करने अलग-अलग ट्रेंड देखने को मिला। कुछ गिरोह सुबह 5:00 बजे से 8:00 बजे तक मार्निक वॉक को जाने वाले वाहन चालकों को निशाना बनाते हैं। लोग गाड़ी पार्क कर जिम या पार्कों में चले जाते हैं तो चोर उसे उड़ा लेते हैं।

कुछ गिरोह दोपहर 10-00 बजे से शाम 5-00 बजे तक यह काम करते हैं। कार्यालय के समय पर सड़क पर खड़ी गाड़ियों को चोरी करते हैं। अधिकतर संगठित गिरोह महंगी कारों को रात 11-00 बजे से सुबह 4-00 बजे के बीच चोरी करते हैं। इस समय सबसे अधिक वाहन चोरी होते हैं।

छह माह में हुए वाहन चोरी के मामले.....

वर्ष	मामले	सुलझाए गए	गिरफ्तारी
-2023	19277	3203	2347
-2022	11157	3357	2510

एप डाउनलोड कराकर युवती के खाते से ठगी, आरोपी को झारखंड के जंगालों से दबोचा

नई दिल्ली। एप डाउनलोड करवाने के बाद आरोपियों ने पीड़िता के खाते में सेंध लगा दी। मामला शाहदरा इलाके का है जहां आरोपी ने महिला के खाते से 198208 रुपए ठग लिये। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज आरोपी को झारखंड के जंगालों से दबोच लिया।

पकड़ा गया आरोपी प्रवीन पोद्दार है। पुलिस ने आरोपी की गिरफ्तारी से छह मामले सुलझाने का दावा किया है। इसके खाते में तीन लाख रुपये फ्रीज किए गए हैं। आरोपी के पास से वारदात में इस्तेमाल मोबाइल फोन और दो सिमकार्ड बरामद हुए हैं। आरोपी के खिलाफ नेशनल साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल पर छह शिकायतें हैं। पिछले 15 दिनों के भीतर आरोपी ने कई लोगों से लाखों की ठगी की। इसकी बैंक खाते की जानकारी से इसका खुलासा हुआ है।

शाहदरा जिला डीसीपी रोहित मीणा ने बताया कि शाहदरा निवासी अरजीना नामक युवती ने अपना मोबाइल फोन बदला था। दूसरे फोन में सारे एप डालने के बाद उसका पेटीएम बंद हो गया। इसके लिए अरजीना ने गूगल की मदद से पेटीएम का कस्टमर केयर नंबर लेने का प्रयास किया। नंबर तो उसे नहीं मिला, लेकिन कुछ ही देर में उसके पास एक अज्ञात नंबर से कॉल आई कॉलर ने खुद को पेटीएम का प्रतिनिधि बताकर उसकी समस्या सुनी। बाद में पेटीएम पर नया ऑफर देने की बात कर युवती से एक एप डाउनलोड करा ली। इसके बाद आरोपी ने पेटीएम चालू करने के लिए पीड़िता से उसके मोबाइल के शुरुआती पांच अंक डालने के लिए कहा। जैसे ही पीड़िता ने अपने मोबाइल नंबर के शुरुआती पांच अंक डाले तो आरोपी ने यूपीआई का पिन नंबर डालने के लिए कहा। ऐसा करते ही पीड़िता के खाते से 99104 और 99104 रुपये दो बार में 198208 लाख रुपये कट गए। युवती ने तुरंत अपना खाता ब्लॉक करवाया। इसके बाद मामले की शिकायत दी।

साइबर थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर टीम ने जांच शुरू की पता चला कि ठगी की रकम ओडिशा के एक खाते में ट्रांसफर हुई है जबकि आरोपी का नंबर झारखंड के देवघर स्थित जंगलों में एक्टिवेट है। तुरंत एसआई स्वेता अपनी टीम के साथ झारखंड पहुंची और आरोपी को दबोच लिया। जांच के दौरान पुलिस को पता चला कि आरोपी ग्रेजुएट है। आरोपी पिछले काफी समय से साइबर ठगी की वारदात को अंजाम दे रहा है।

नशे की लत पूरा करने के लिए करता था वारदात, स्नैचर गिरफ्तार

नई दिल्ली। उत्तर पूर्वी जिले की भजनपुरा पुलिस ने एक ऐसे शातिर स्नैचर को रंगे हाथ गिरफ्तार किया है जो नशे की लत पूरा करने के लिए वारदातों को अंजाम देता था। पकड़ा गया आरोपी आकाश उर्फ अक्षय निवासी मोहनपुरी, मौजपुर है। पुलिस ने इसके पास से आधा दर्जन सोने के कुंडल और वारदात में इस्तेमाल बाइक बरामद की है। यह शातिर स्नैचर एक के बाद एक कई वारदातों को अंजाम देकर पुलिस के साथ स्थानीय लोगों के लिए सरदर्द बना था। पुलिस पकड़े गए आरोपी से पूछताछ कर मामले की जांच कर रही है। उत्तर-पूर्वी जिला डीसीपी डॉ.जॉय टिर्की ने बताया कि थाना अध्यक्ष नरेंद्र कुमार शर्मा की देखरेख में 4 अगस्त

को भजनपुरा थाने की टीम हेड कांस्टेबल अश्वनी, कुलदीप और कांस्टेबल सौरभ शाम के समय सी ब्लॉक भजनपुरा में पेट्रोलिंग कर रहे थे। तभी उन्होंने एक महिला की चोर चोर पकड़ो पकड़ो चिल्लाने की आवाज़ सुनी। पुलिस मौके पर पहुंची जहां महिला ने पुलिस को बताया कि बाइक सवार एक शख्स उनके कानों के कुंडल छीनकर भाग गया है। पुलिस ने तुरंत महिला के बताए दिशा में आपकी गाड़ी दौड़ा दी, कुछ दूरी पर ही उन्होंने महिला द्वारा बताए हुलिए का बाइक सवार शख्स देखा और पीछा करके उसे धर दबोचा। पूछताछ में पता चला कि आरोपी आसानी से पैसा कमाने के लिए अपराध कर रहा था और नशे की लत को पूरा करता था।

खबर दृष्टिकोण
स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक आरती कश्यप द्वारा शौर्य प्रिंटर्स, शिवपुरी कालोनी, निकट बांसमण्डी चौराहा, लखनऊ से मुद्रित एवं 551घ/1316, निकट शराफत जनरल स्टोर, आजाद नगर, आलमबाग, लखनऊ- 226005 (उ.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक- आरती कश्यप, Mob. : 9555229060,9838938570 Email- khabardrishtikon@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा) R.N.I. NO.: UPHIN/2021/82210